মূল্যঃ — অগ্রিম বার্ষিক সমেত অতিরিক্তা। ডাক মাশুল ১॥৫, হাগাসিক সমেত অতিরিক্তা৪। ডাক মাশুল ১০, ত্রৈমাসিক সমেত অতিরিক্তাও, ডাক মাশুল। ১০ আন।। অন্ত্রিম বার্ষিক ১০।০, ভাক মাশুল ১।০টাকা। বিজ্ঞাপন প্রকাশের মূল্যঃ—প্রতি পাঁক্তি, প্রথম, দ্বিতীয় ও তৃতীয় বার ১০, চতুর্প ও ততোধিকবার ১০জানা।

इंश्ट्रकी अधिकर्शक किलाना ।।।

৭ম ভাগ

८६ मश्था

বিজ্ঞাপন।

यक्षल ७८किम।

भयन्त्रन्तानी त्राज्या, जिम्मात, वावमाशी अ व्यनाभा জান্ত লোকদিগের কলিকাতায় যদি কোন দ্রব্য খরিদ क्रिंट इश তाञा आभामिशिक लिथिल आभाम जि मद्र ७ अल्ले मृत्ला जाशा जा कि त्र कि त्रा यथा आति (श्र न করিতে প্রস্তুত আছি। যত টাকার জিনিশ খরিদ হইবে তাহার প্রতি শতকরা আমরা পাচ টাকা ক্মিসন কাটিয়া महेव। जर्जादात महम र छाका शांठाहर इहेरव। অমৃতবাজার পাতিকার প্রকাশক প্রযুক্ত বাবু চন্দ্র মাথ রায় মহাশয়ের বরাবর অডার ও টাকা পাঠাইলে আ-মর। তাহা প্রাপ্ত হইব। কাহারো কোন পুস্তক কি অন্য কোন বিষয় ছাপাইয়া লইতে হইলে তাহারো বিশেষ সুবিধা করিয়া দিতে পারি।

बी जनील ठल्प च द्वेष ठार्या जल कर्ष

জ্ঞাকাপড়, পুন্তক, ফোদনারি, ফাণিচার ইত্যাদি যত প্রকার দ্রব্য কলিকাতায় পাওয়া যায় তাহা আমরা প্রেরণ করিতে প্রস্তুত আছি। এত্তির অপ্প সুদে যত छोक। इडेक कर्ज करिया इहेल जाहार द्यागाए করিয়া দিতে পারিব।

कि उशान्क श्र्डिक!

धाई शुखक ঢांका वावूत वाकात वावू किट्लाति लाल बाय किथूबि मश्लाखब वामाय शानुकादिक निक्छे छ अन्, दक्, हर्षिश्यादात ७ (शहें जि ताशाल माम वत्मार्शिधार्यत (माकादन शांख्या वहरव

> ' চিकिৎमां उद्ध यां मिक श्व।' काश्विन गाम इइट ज आकाश्वि ।

त्रशल १२ (शकी कमात २।० वाडाई क्यी व्यक्ता व्यधिम वर्षिक मृना १५०, जाकगा जल। । जा ना। का शाला কলিকাতা, तर्व क त, वह उला डी है ।

> खिर्गारमञ्जू नाथ दिन ज ह्रकार्यग्राथ, का

बियुक कालियय घरेक श्रेशे नित्र लिथिड क्षक मकल कलिका जा (वर् हों है। यात छि है ७० नश मः क्रिंग शास्त्र श्रुकालाय जवर तानामार जोवराति लान माख्त (माका । क्य क्तिए शाख्य ।

প্রথম চরিভাইক ধিভীয় চরিভাইক

ho

अथगडान शनागग

न नीननीयुक यश्राकाशियाक -वन्नान श्लाशिशिज वाश्व जल्यामिन अ जल्लान।

> ब्येष्ट किट्मांत (मन कवित्रां द ज्ञ जाश द्विं नाज अवधानश। ३८७ वर लायाव हिर्श्व (बाफ किनाबी

व्लाथाना, कलिकाडा। छिशद्वाक जेरधानदा कारोदक्त कर्शा वा-ग यट वत नर्वद्यकात द्वादगत नानाविध व्यक्तिय थ, हेडल, युक् अ शाहिगाहि, जूलक मृत्लिक मन । शहर शांश र्थमा याम ध्वर करनेक छ-

शयुक्त চিকিৎসক সর্মদা তথায় উপস্থিত থাকিয়া वावन्था श्रमंक उषशामि श्रमंन करतन।

वक्गृज भीषात् मदशेषश

उ रेड: नत । या व व इ । दा श युक्त छ व ध মূল্য নায় ডাকমাণ্ডল ३० हें।का।

कुछन इमा देजन।

उ किन व्यक्तांत्र शक्ता शाक्ष मा इहेश विभिन्ने व्याह ध्वर छेहा मिवनां मित्र नियमाविन छेहात প্রভূতি শিরোগে আরোগা, মান্তিফ সুশী তল ও ठकू । इबि इस । इंश व्यक्ति रत्ना शक्य विष्

मूला > लिलि > जाकमाणन । । जाना

मखः नाधन ह्र्न

इंश नियागि काला वावश्व करिएल निक्ष मर्कश्चकात्र पञ्च द्रांगाः तागा, पञ्चम् मृष्, यूर्थत इर्गक्ष मृत धावः मख छेख्य छख वर्ग इय।

३ (को छ। ॥० जाकमा छल ।० जाना

स्थाः स्टा

इंश दोश सूथ मणःला विक्रं किल (जाशां र (म्टा) अ खन निक्ष जारताना इस । एक जुक कामल अ श्रांतकात इहेशा गूथकी ममिक वर्षिड उ वर्णत छे एकर्ष मन्नामिक इत्र धवर कूलि, घागा-ि, कूलकानि कार्ताभा इत । छेश मम् भक्षयुक्त ।

३ निर्माल ५० एकिश्चल १०/० जाना वीविद्याम लाल (मन एश किविता क कर्या भाक।

THE UNIVERSAL MEDICAL HALL N. C. PAUL AND CO'S MOST WONDER-FUL PILLS!

A Specific for chronic and malarious fevers, enlarged spleen und liver.

अन्या विका!! পুরাতন ও ম্যালেরিয়া অর্থাৎ সংক্রো-यक ज्यादत द्वः भारा ७ यक् द्वारात यहा-

खेयथ ।

ध शर्भाख डेशद्रां छ द्रांशां नित्र य म-कल अवध धाकः व इइशार्ष जाहा जारनरक (मवन क्रिया खाथ दम आंद्रांशा मांड क्द्रन शदं जाला काला मरधा श्रमका व शीफिड इ-हेट जारा भक्त मा दमशा योग । जिक जिकार ब ज्लासहें छा छो सान इहें ए ए ए ता जे मकल छे यश षांत्र। तांश (कवल ऋशिक थाटक माज, এक वादत (রাগ বিনাশ হয় না। কারণ যে পর্যান্ত ম্যা-लिंबिय भारीत इहेट निर्श ना इय म शर्याख गूनर्व । शिष्ठ इहेदां ब्र म छ। वना थारक। এই নিমিত্ত আমরণ বহুতর বহুদশী ও সুবি-था। ज कि कि एम क्रिय मिह्ज श्रा गर्भ कि श्रिश । धरे काल्यां नामक (दोशांत्रल विका शंकान क्तिट्रिश खन्माग्र श्र हाति वर्मतार्गि नाना शकांत्र, शतीका षात्रा हेहा जानिट शां-द्या शिशां एक एवर् यह यह स्थि क्या क्या क्या विश्वा महत्य উল্লিখিত রোগাক্তাম ব্যক্তিগণ সম্পূর্ণ

व्यादितांशा लाज कितिशां एक्न, ध्वमन कि यां इति-हे शकी किकि भाग नित्रक इहेग्रा वाजाना किकिश्माश्च जारबाशा लां क किब्रिक भारबन नाई, डाँशांख (५३) विका (मवन कर्त्रिया वादिश्या नां क कित्रशाद इन। इंश भारीत इ-ইতে कुईन। ইনের ও गालि রিয়ার বিষ নিগতি कितियांत । धक श्राकात देनत छेमध विनिद्दन वना ইহা ব্যবহারে নিশ্চয় কেশ হীনতা (টাক) দূর যাইতে গারে। প্রতি কোটায় ৩০টা বটিকা

थिं कि दिने होत्र माला ऽ॥० होका एक मा॰ ला । ॰ व्याना। (धई माला दिन रहे। (को है। व्यना-शांत्म या इंटिज शादत । जाशत

व्योगद्वा वर् मिवमाविधि विलाज इहेटज हैं वाकी छेमधानि जानाहेशा जाब नगती उ ভারতবযে র নানা স্থানে বিক্রয় ও প্রেরণ ক-त्रिट्डिश (ध्यम्द्र (य मकल यर्शम्य डेङ अध्यामित्र नियम विद्यक्ता कतिया थारकन उ य-ज म, त्ला छेलम क्रिश का त्रा करित के किए। करतन তाँ शिम हात्रिक निक्ते जा मामिराज निक्न वाई य यथन यादा श्राजन इहरक ज्यादा -

वागामिशक लिशिल ७ ग्ला (श्रात क्रिल व्यक्तिमञ्ज (श्रांत कितिन, ७ अम्दिन मृत्नात यूफिङ ङोलिका विना मुल्ला विना छाक मारूल शाठी हेव धवर अयभामि जिल्ला जाशताशत एका याश প্রয়োজন ইইবেক তাহাও স্লভ ম, লো क्या कित्रा भागि। है जि भाति व जाहात कि गगन भाज कर्ता ए शांक होका माज लहेव।

धार, भी, शांल धार कार इडेनिङाइटलाल (मिडिकल इल। २४०। २४-८ नः जाशांत हिल्शूत । ब्रांड

कलिकां जा, (भाजां वां जां जा । भित्यश्वानारिक मूला ५० जाना एकशालन /० THE plot of the work was evidently suggeted by the Ramayana. The author seems to have no ordinary power and poetical images and we meet in it with scenes deeply pathetics The Bengalee.

রমেশ বাবু माधांत्र ती जितं वा जिक्ता धहे ना हेटक धकरी जिल्ल खारा रावशांत कर्त्र शांहरून। निड्डींव वाजनात गमा बाद निड्डींव, उड्डाना त्रसम्भ वाव नारिकशं ज्ञां जगदनंत देः जिं ज्ञा परशंत ভাব সকল निशं छ । जिशं जो कत हत्य धाकां भ कतिशाद्ब । वाजना छ्डे धक भानि नांद्रेरकत श्रां, न २ शिक्तिश्वा इत्थ क्रिक्का क्रक्त श्रा व,वझ इहेशाइ (पथा यांश, कि हा तम मकल ना-हेककात मकल भगहर एम नियम तका कारतन नाई। शि एउंत ना छै:क ७३ ही छी मण्या निकार त-किंड इहेर्रा इ ध्वर गाँउ म्थानि थारे कतिया डीहात कि जि जिल्ला का ब्योजिना के कि शाहि।—बागुक থাজার গাতিকা প্রাকৃতি।

क्रानिश ७ मश्क ज नाहेखां हो धनश अगृड व, जांत्र शक्तिकां वाकी (म शांश्रवां।

(बल अट्यंत निमिन जामारित क्र ब कि व

ज (मर्भ (तन अद्य निर्माणार्थ के भर्ग । 2922222 हो । बात इड्यांटर । इंकार अवविक গ্ৰণ মণ্ডের মাভাগারতে অগ্র গোটে দিয়াটে धार्थार शवर्षिण जार्थित अद्भाव वर्षे वर्षे करियां-(ছ्न (य दिन उदयु उत्ते । इति । इति । जा वित्र का कर ए छ। वा इरित सुन वा शामाय का इरेटन श्वारमण्डे खाश (शांशांहेशा नि व । शांगांहिमण्डे विख इरेट अक स्व ७००४४६२० छोली है निमिन वाले करियगाष्ट्रमा सुख्ताः हे बार्धाना (परिनाद्धाना र.म जाग्रा हेश ज य ज मिल इस्टा जारा मिन, दोका जानिया जामः दमत । दिन (थारापान करिया) (उल अर्य निर्माण करित्त वानिए ज्ना एथन यानि हिन (मश्रादाभीत्र) अहे तथा कि जिल्ल कित्र कि ठांश को हा (मश्रांदन शिश्रा (तन खाश निम् । । किन (क्टल किन ? किन शृहित यो किर्ति थो हेटल किंद्रिक शिष्ठाक इन धवर विभि धइ व्यक्षांन छात्र (त.न एएस (कांन्य) नित कांज श्रत्व छात वाशामा छे । बार्श कार्श इस ना हे, दिन उदस्त उत्यादि वानाना यव क्रथ लिंडा वाहि वाहा व व्यादात जांशादमत। इंश निर्मात्वत निमिल योग यम-ल्लीत व्यक्षिकांश्य लंखा देश्तांक कांचिं, निर्माण करिन-वात जाना अधिकाश्य नजा देश जिम्दिशत धवश রেলওয়ের চাকুরিরও অধিকাংশ লভ্য ইংর'জ-मिटगत्र। इंश लहेशा उ चौराता को ख नन। (तन्त छ ए कर्जुशकी अशा कथां अधार अदम्भी स लाकरक व्यथमान ना कबन, ভাছাদের সুবিধার নিমিত कथन हे एक थो । क दान ना। क इता जाना दिन त वानिष्ठा मिकाशाद्य एन अत्य निमानि कद्वन नाइ, আমরণ প্রাথীনভার শৃংখ্ল না ভঙ্গ করিতে পারি সেই উ.দেশ্য সম্পন্ন করিবার নিমিত্ত রেলওয়ে नियां १ विशिष्ट्र । जन, दिन श्व वाद्य दात्य (तन्त्र) श প্রস্তিহা অন্তঃ ভাহার দিত্রণ বালে এখানে উহা প্রস্তুত করিরাছেন। গোড়গুড়ি আমাদের প্রতি धाई क्रश व्यक्ति । व व्यव्योगात करियो (तन अद्य नि-मा । क तिराहे नय का ख (म उरा इंडेक, जाहा उनरा। कांगता यथन गांवर्गायण्डेन প্राक्ति शकांना क्रांत, रथन (क्रांन कथा विल, उथन क्रांवांत धरे (तमा विद्या (मथारेश) आंगामिश (क वना र स आंश्री) ভারি অয়ভজ্ঞ!

व्यागता (तन अर्यत नि-छि ध श्रीख (काषीर होका पछ निशाहि। इंशत निशिख महत्य इंश्ताक भतियोह धनां । इहेगां इन এयः महञ्च महञ्च रिन्द्र अ युमलागान शांत्र गांत डेव्य शिशांट । शं अ ४९मत গাবন্থেটের তদ্ধ স্থলের নিমিত্ত রাজ কোষ হইতে 38२४८८८० ऐका मिट्ड इहेग्राट्ड । शंब ध वरमदात

गल हां जी दिल अधि कि शूर्ति এ ज कि जि इहेज रि है हो छेठा है हा। (मध्यात कथा इत, जिन (मरे लाहेन इइट ५ थत वादम न ज कता १२ छोका ल छा (मथा: हेशार न गरा अ (मर्भ कान लाइरन किर पिथा-रेटि शास्त्र मारे। गाउना स्तन अस्त किञाष्ट् इइया (तल उत्य (कांन्यानि छेड्। शवर्ग, या छेत नि व छे विक्य करतन। भवर्षभणे निष्क् कि कि मन छ लाहे। क्रिंग क्र. ७ मिट ज लाशिटलन, व्यात ठाला है । ना भा-विशा देखे विशाल दिल उर्शत अद्भार शियो সাহেবের ভত্তাব্যানে রক্ষা করিলেন। প্রিভেজ য়া যাউক কাহার গরজ পড়িয়াছে যে তাহ দেখে? য়া এত গেরিব করেন তাহা আমাদের টাকার নিমিত। াহেব হত,শ হইলা ছা ডিলা দিলেন। তাহার গত বংসর ২২২৪৩২২০ ব্যক্তি রেলওয়ে দারা कागता इंश्तां जिल्लात विशास ति न इहेता शत इंह तागगि वार्त हाउ विश उ इहेल अवश गाउना (तन अराउ अथन एक कि इअरा वक्ष इ। व्यात भंड कता विकिश शाद सम ना श्वासिशन जार। नारे, लच, उ इरेट उट्हा गवर्गिय हे इर हर कत छे शत পোষাইয়া দিব স্বীকার করিতাম, তাহা হলে আনে- দখিতেছেন। গব-নিমণ্ট স্পষ্ট দে:খ.ত:২ন ষে এদেশী য়াছে। প্রথম শ্রেণীতে বোধ হয় ১৪ আনা ইংরাজ প রিকা, কান্স প্রভৃতি সাল দেশ হততে লোকে রাণণ রেলওয়েতে কর্ত্ব করিতে পারে, আ গর বে সমু- আর ছই আনা এদেশীয়, দ্বিটায় শ্রেণীতে অং দয় লাইন ক্তিগ্রস্থ হইয়া পারিত্য, গ করার কথা হয় কৈরও অধিক এদেশীয় এবং অপার শ্রেণীতে প্রায় जांश इरेट अंजकरा ३२। १८ छ।का लंडा करिंद भारत, ত्यू इंशादित शाद इंश्व कड़ा. वत छात इंटल इंश्त्रां जित्र विश्विताक विकास कित्रा जिल्ल इंग्ली जिल्ल के किया वलाल जामता क्र उद्मित्शित मटल निश्किश्च इरे। वेष वेष (तल अत्यत) भेज करो ए छोका श्वम (शायारेया मिटज इय, ভার এখন ইহাদের হাতে না বেওয়া হউক কিন্তু রেলওয়েতে যত লভ্য উৎপন্ন হয় ভাহার ১৫ আনা हे शां आ ना होता त्र मक जूनि उउ तल उत्स शहु । इन एक है इन उत्स उ कि विकास ना नि इाठी अ भाजना (तन एए स्टांक गूर्यक छाना हैटि यथन हैट्टा उथन छा हाता छो। उवसीय (तन एए नहिन शादिन ना ? (मर्गात बनाएं इसे । वनाल तिल अत्यत क्य स्थान ज्या निर्मा विश्व विश्व विश्व विश्व कि कि विश्व निशित् थि सिक मार्व कं छो का वाश करवन? आंग-ता याँ पठ (म श्माय ठिक ना जानि, जोशंत । नाम, जिन তার नि, इ ত यে এক জন কণ্ট্রাকটরকে আমাদের हरकत देशत श्रीय लक दोग गर्ड श्री निटिं इहेल जोश जामना पिथियाहि। त्राम गांज वार्कर्क धलक छोका कथनरे पछ लाशिक ना। এ টো ह। প্रि. छे ज माद्द्व निष्ज् कि कान इंश्ट्रता. ज त कि इंश्लिए अत फि. ज इंश्व ना, अ जता श ভিনি অনায়। দে এরপ একটী ভুল क ডিভে পারেন। किस त्रांशिक भारत अहे का खिल पण हिंद करें इइंछ। कात्रण जिनि (प्रांथां जन दिन क्रिंड उँ शंत य-एमभौश्रात इ जक भाषा करिया श्री श्री करिए इरिया গত वाहिका उ वृक्षिः ज नल इ. ही । ए एल व ब. नक थानि डो निशा योग एवः तोगगि वातू छेर्न िन कर्न, किन्नु इस्टे (वन्नन (तन उर्ग यथन वन) त जिल्ल ভাসিয়া যায় তথন এক স্থানে এ ট যু कि । लहेश (शाल आंज मायाना व एस डेश निर्मान इहें ज, िल्ल शित्रिक मार्ड्य विलिएलन (व मि मार्ड्यत कोक नश, वाङ्गालिङ शांति। जिन अहे निशिख अकछे। पश यृजिक। बारा शूर्न कति दलन। लक लक होका वाश क बल्लन उथा । भाष्टि वामालिब गठ कांज कता इस बिल्या (लिट्य युवारेया लिख्या इरेल ना। श्चार्ति वर्ष व एक कि एक श्रीति इन ना, कार्य ভাহার । নে পড়িত যে আমাদের তেজ করিবার যো नाई। (७ ज कि ति जित नि जित मर्सना ।

व्यान्ध्या ७३ (य (बल ७८० वांता शना जव। भागिरिल अदशक्त का निवंदा शोहर, नोष भोष भोर धवा গড शफ्डा कितिल वर्मत आगाएमत १११७२२७० वाक काल फिल्मोंक इउग्राय महाजन मिट्रात श्टर्सत होका मुख मिट इ इंशिट्ड । - नाश विलय किंग्रा का जामिन कि बिल्य किंड রেল ওয়ের কর্ত্তরের ভার এ দেশীয়দিগের ছত্তে গ্রাস্থ হইতে হয়, তথাত রেল ওয়ে দারা দিন দিন মাল फिल्म हिल ना मिल्म बामगांज वातू पृत करिन आगर्मान वृक्ति इल्ला पूर्द श्रेक्त जिल्म वर् शाद्या किन एक भारता अनलहां तिल उद्यंत हाम इहेट ए । एतल उद्यंत किन याहा थान कार्या क्रांम श्रमक निर्मित्र करिएउट्च व क्रांग नट्ड, विद्व शादत दर्गकायः वक मादम जाहा शावाहेदन जा-

इाउ खीकाव, त्रीकां वाफ जूकां न कूर्व नाना विगु जा-(इ. जोरो मह, क्रि. जड श्रोकांत ज्थां ज्यान करत्ति (तर्ल ना भार् । हेश (नोका (यादम यांन व्यायमानि दक्ष गिन कतिरव। तिल उत्य कज्भाकी र निर्मात धरे तथ हम एक त कार्या शानानी। (तल अदा त्नान्यानि था जित जगात र्वामशा व्याष्ट्रिंग, लांड इडेक (लांकगांन इडेक भाज-करा ৫ छोका चूफ शवर्णशान फिरवन, कर्जुशकीय-मिश्नित लांड लांकमारनत निरक मुखे वतांत एंड প্রয়োজন হয় না, সুত্রাং আগুণ ল গুক, আর পুতি-

गमनागमन कित्रां ए । इंशत मुक्षा ४२०४०७ जन थ-थम (छानी (७, ৫८८००२ জन दिनी एक । विनी एक ५वर २०२४८८७७ জन ज् जीय उ हर्जूर्श त्यानी: ज जमन कर्त-जित्नीर । दिल उत्य स्वार्श य गाल जागनि उर्शनि ल अदात ममून स कि शृतन कार्यान कि इहर, व्यामामित्यंत कर्न्क इय्न, व्यावात द्वल उत्य कांच्या नत পারেন, তি.न कि इसे एकल রেল ওয়ে চালাইতে ছাড়িতে পারেন এবং তাহারা এই নিমিত্ত যত টাকা वाय कतियादिन जाश भवनियन्छ ज्ञानिभारक हे॰ तां . जता वत्नन (व आंगता जितकान जाहादन त निक छे क् ज्ञा शांद भ आ ।

> धक धक कः न अक अवि विषः यत छे । शिंख इय़। शिविधाति मधारखत मदाम्यात एउ । ध्याय उ श्रविशिष्ठ इरेट उट्ह। नियात्रम् मार्ह्दवत एउडे कर्व भिर्दे जोश वना याय ना। ५ एड. ज जा जात वर्ष जबक्रिंग रहा नारे, रेहां व हिल्ला म इरलाज शर्गाख अवाहिण इश्याहि। धर्थात देशत कि मागा इहेगाएছ वर्षे किञ्च इंश्निए इश्न नवनायू-तांग। यांश इंडेक इंश्तां छा छा जिंदा जाशावमा शतक धन वान। इश्लिकागारिन त गला वाणि धः न श्रीख विलिया जाहाता वड जाजि इहेगा इन अवर यज जिन श्रे अथ वाशि थाकित्व ७७ मिन ७ इ।३१ विष জাতি था वि। वन । मिशांदमंत मक के भा हे । इर एकता श्रथम शहर १८६त वा भी ल श्वां ख इइटलन । ७९ शरत (लक्टिंटन हे गवर्गतंत्रत नि-किं व्याद्यमन किंद्रिनन। त्मिथात्न अ श्रांग्ड् इहेटलन र् उक्ता भागानिक विकाद करें । जन्म विकाद करें वा कि জন সাধার পা নিকট বলিতে আরম্ভ করিয়াছেন ষে शांत व्यतिहात इडेग्राट्ड। शृत्वि इडांग इश्ताकि मिश्क मदश्यम करिया अमयस्य आल्मानन करिए हिल्ला, क्टिंग इश्वाक वाजालि मृनलगान मञ्जूषयात्क এক ত্রিত করিয়া সথোধন করিতে অ'রম্ভ করিলেন ध (मटल छ एकात कतिया अ का ख इहेलन ना, हे ९ ल छि व्यावात চ ९कात व्यान छ कित्राह्म । तिथानकात श्रभा २ मञ्जान शद्धत मन्त्रोमदकता इंशाई लईशा उर्क वि ७ के व्यादेख क ति शार्ष्ट्न। एक इराउ नशा पर्देश, उत्यक्षेत्नक श्रेष्ठ्र हिश्नए श्रिश्न श्रिश्न श्राम श्रीह-पिश्टक व्यादिवात रज कहा इहेसाट एव वित्र मार्ट्या প্रতি গ্ৰণ্মেট मन्श्र অবিচার ক शांटिन । यिन अभिशांत्रम माट्य गकर्मियां । श्वां र्रेश्वा काता क्षा र्रेशाहित्लन, शिष्ठ रारेत्कात

१म जांग

कलिकाङा— २ इ। लोग इङ्ग्लिकाइ, मन ১२৮১ माल। इर १५६ फिरमञ्ज ১৮५९ श्रु जदा।

२१। (शोध १२४) मान।

উष ज

व्यक्ति उवन वृद्धि विवत्र । (छ। शामकान इडेट ज।)

आर्था जाि जाि वा (य विषयः इन्ड किश ना व विशाहिन श्चिमन विषय् विध्यमिक। शुक्वकात्न जात्उत्र व्याद्यात्रा অসুমান বলে জগতের যে সকল তত্ত্র নিদ্ধারণ করি-शाह्न, नाना निध धाठाक धामान षात्रा अधूना ठाम्न उन्नावधात्र इदे एक हा।

अहे श्राश्चिति (य विषय व्यवलयन क्रियो निर्धिष्ठ इंडेट्ड्ड् डाइ। शांठ क्रिलि मामानाडः এই वाध इंड्रे यে वकि मामाना अवाम वारकात अिं निर्देत कित्रिया जा चीर क्रयरक्त्र। श्राट्यक नर्स्त्र जानिनी जाकि इसि अवाहि निक्रीं क द्रा थारक, वस्त क जारा नर् इं इर्ग वि श्राम वाकारक मां अर्थ मां क्राप्त वर्ष मर्था प्रिंचिक छ इंडिकामि घडेन। अवनिक्षा क्रिया (पंत्र ত। छ। कना । जम्नक नर्श ज्वा जार्ष मून जार्छ। य मूल इहें जिसकां शत अवीम वोका निर्शेष इहें शार्ष इ। लोक हिटें जियो महागः हाशाशाश महियं शताणंत यि थागीज मा जि मर्श इंडा व क्या स्था इंडा विन धग्रक প্राथा व इहेट छे छ छ। श्राम वाकारि वाकाला কবিতায রচিত। কবিতাটা কত কালের তাহার স্থিরত। नाह। खित कता अ महज वार्षात्र नट्ट। अ जना (म कियो শরিত্যাগ করা গোল। কবিতাতী দেখিয়া যিনি যাহা অ-तूमान करत्रन ककन, आमता अधियश किছू वालि डेम्हा कित्र ना। তবে এ क्या व्यवना वला छेठिত व वि ् वाङ्गा (मर्गंत्र मर्वत छात्रांच जार्ड। ज्याना छ-पिट्ला विम लिलि थि छ श्रवाम वा कात्र ममानार्थक व्यथेवा यस्त्री चूराशी (कान कथा व्यवना व्याह्य श्री श्री व्यव ये चाडीब প্রাচীন ও মান্য সুতরাং ভদীয় সংস্কৃত বচনের তাৎপर्या वार्थान वार्व প্রচলিত ভাষা সমূহের মধ্যে निजास शत्क जक जकि छावाम वाकाअ इंछि इंद्रा थाकित्व। छे ज गूनिव (तत्र व व व न भू माद्र व म जाया त य धाराम वाका मक्ष मिं इशाद्य जागत महिल मश-कुछ उठन मिलन करिया (मिथिटल कार्यामिशःक धनायाम मिट्ड इइट्र ।

बाङ्गाला প্रवाप-वाका-मभूट्इत एक (पन माज श्रम-किं इडेल। यश्न,—

व्याघाष्ट्र नवमी खुन न शथा। তাতে আছে জলের লেখা। यिन-वर्षं हें म विशिष् भारमात्र ভात ना मरह स्मिनी॥ यि वट्यं क्षा। भवर एक मार्श ममू खन्न एक भी॥ यि विषय म्यन भारत। यथा मयु ए इ । । यिन पूर्या (इटम वटम शांदि। ठाषाद (गांक विकाय कार्डे॥

Б'र्यामिट्शंत थावाम वाटकात माध्खाया क्रिल ्र शह माज जान। यात्र (य, जायाज मारमर् छक्र शकीय नवमी ्राजिशिएज ब्राग्निया शिव करियाज शाबिर वर्षाकारल ब्रा अभूमाग्र लक्न शिविष्क हे क्रांश श्रिव कवा याग्र। हे-। সারা যে তিথিটিকে অবলম্বন করিয়া রুষ্টি গণনা করে। কালের গাতিও লোকের কচি অনুসার পরিষ্কৃত। मि जिथिति जात्रज्वत्य त्र मकल लाकित स्वत्र शाकितात । इत्मावत्क मां एकिशित जिथित । अहे श्रेताम वाकित मूल जारू-मञ्चावना। । । कि मिन तथ याजात नवभी (डेन हो। तथित शृद्धः मञ्चान कि तिल शर्भावतक वे भित्र इस। मानवर्शन र्जानवम ।।

म इथि।

ह्ना-वान्श्राकादत वाः नक क्ला-इरियनी इछि मन्श्रां छ। इ लांदरां मगुरमन रक्षा— अञास क्लांवन इस। शाहिन मा।

यथा मभू ए ज व छल्। ठ त — जन। इछि (इ ज ल ल ज न न नमी প্রভৃতি জলাশায় পরিশুক হইবার সম্ভাবনা। সু-তরাং তথার বক প্রভৃতি সামান্য জলচর পক্ষী মধ্য-ऋटल विमिश्न दिवाद कविद् भारत।

यिन स्था (इरम वरम शार्षे – जा भाग कारल यिन स्र्रा थ्रथत एउक थ्रकाण शृक्त क भ्रमानि इहेएउ क्रना-त्रुष्ठ छोर् व्यव्यक्षिक इन, उत्य (म यथ्मत निक्षत তুর্ভিক হইবার সম্বাবন। এবং তল্লিবন্ধান চ্যা নিরল হয়।

এখন পরাশরের বচন দেখ। व्यामाष्मा मिट्ड शत्क नवमा यमि वर्षा । वर्ष (छाव नम। (मव खजा इस्की कूर छोड़ नः ॥ शक्रीयां ही नवमार्भम्यार्शाहर छी निर्दालपुर श्राहर । श्रीय़श्कालश्विधाल थ्रंज्ञ क्रित्रार्ण। मललाकार्यस्थाम्॥ कीमूरेज (व छिरजा इस्मी यिन जविज वविर्गमा-मार्गाइख-देशिल।

তাবৎপর্যান্ত্রেব প্রাণদ্ধি জলদে। যাবদন্তং তুলায়াঃ॥ পরশশরস্মতিঃ; কৃষিদংগ্রহঃ।

वाद्यना थ्रवाम वाकानी मश्क्र ७ वहन जार्भका उत्र নির্ণা পক্ষে বিশেষ অগ্রসর বলিয়া অনুমান করা याद्देश शादा। मश्कुष्ठ वहत्व मामाबाउः छेल् है। द्ररथेत मित्न इसि পত्न उ তদ্দिरमीय इसिन जाजाव माव कथिङ इइेश्वार्छ। वाक्रला श्रवान वारका (जनकार्डःङ) এ দিনের রুষ্টি গাত অবস্থার তারত্যা দারা অনেক বিষ– য়ের বিপর্যায় গাণনা ও স্থাস্থ্রীকৃত হইয়াছে; স্তরাং অভিজ্ঞতা বিষয়ে জনশুচতি রচনা কালীন ক্রযকেরা পূকा পেক। অনেক দূর অগ্রাসর হইয়াছিল এ কথা जनाशात्म निष्मं कर्ता याहेत् भारत।

वाकला जन ज्वा जिल्लिक स्यांत छेन्य काल्य निर्व नाई, किन्छ धे मित्नत जन्छ शंगनहीं পरिकृ हे क्रिंश किथिड इहेशा (ছ। (वाध इश (कवल जख कालित शानना दावाहे অধিকাংশ স্লে অনুমান হইতে পারে বলিয়াই উদয় कारलित कथा পরিতাক্ত इहेग्राह जाना जारता जा-

छेम त न १ दल छेम श्रां हल ७ ७९ छा मिर्न भियमि शुक् थाकित्व, पूर्वाउ उनीय छेनय काल्ल व्यथत कित्रवामानाय বেফিড इहेश। मन्भून मणनाकारत शतिम्नामान इहे-

वाख गंगन काल (यय तां जी चांतां वांक्र इ.स। व्यक्ष गंगन करित्वन এवर उरकारल यमि जे मगउ जीगुउ-इत्मित्र भू नि श्रानिट ३ श्र्या अखोठने कृष्य आरत्र इन करतन जाशा इहेल कार्जिक मारमत दिन्य श्रां जल-माशदमत मञ्जावन। शादक, या शादमद नाद लादक तो छेन् है। तरथत मिन धहे क्रश जिंक्श (मर्थ उ९ अमिनेष ञ्चिषि ७ जनाइधित रिषय वृत्यि इहेर्व जनाज्ञ বিষয় নছে।

(भोव गाटम वांत्र गाम कत भित्रिगां। व्याष्ट्रां मिर्ने विषय श्रेष्ट्र भारम् राग्ने ॥ व्याफ़ाई मिट्न त कब मय जिल थे थ।। व्यक्ति मारमत मिर्नित मध्या मत्र! शेखा। ইথে শীত বাত যাহ। কর নিরপণ। (मइ जानूमादत देश्दव देशाजामि श्रेशन॥

এই জনশ্ৰেতিটিরও মূল আছে। ইছাও অংশ দিন রচিত হয় নাই। বোধ হয় কিছু কাল পুরের সামা-ना आकादब हिल, करम शिख्ड वर्शन वाक हाजूदिङ माश्मातिक घाटनक कार्या छेङ श्रीष धायदत्र निक्छे इमि बिमिं इशि—अभ श्रिमिं अपि भाषा-ममिं माशी। जिमेश तम अनि निस निस निश्ं इसेन। मिनन कित्रिया (मिथिटले डाँश्रिया बीहरूटन गंड गंड वात थानिशेड क्तिएक काश्य ना रेक्ट्र क्यार्य बाश्य विलग्न छेठिएक

मार्निनिन्द्रशः भानः क्षा (भोगा निना तुधः। शंगरश्यां मिकी श्रिष्ठियत्रिष्टि वानिन क्यां ९॥ (मोभवांत्राक् चित्र छित्र श्वरं यामार्शः। निकारिङ इधिशानिः मा९ मक्करलमक्कूल छल ॥ এटेककः शिश्र मरखन योगमा मिनरमा यजः। शुखार्क वामनी इधिक छनारक देन भिकी॥ मर्भिष्ठ शेंकांक वांकमान्यक्रियन ह। विटळ्या मामिकी इछिन् छ । वा ६९ मिवानिनः ॥ धूली जिए तत धवली क्रज मखदी कर বিদ্যাচ্ছ টাচ্ছ বিভ বাৰণদিগি, ভাগম। (शीर्य यम। जविज भामि मिर्जि शिस्म। তোয়েন তত্ৰ সকলা প্ল তে ধরিত্রী॥ (भीरिय मानि यमा त्रिछिः क्वािका यमा जंदवर। उनामि मथाम गामि जाश जिथिश क्षीवार ज महीम।। লোকে কহিয়। খাকেন পোষ মাসের যে দিন র্ষি

व्यथवा कुज् वार्षिका इय जमामि क्रिया १५० मित्नव मिन निम्ह यह इस्ति। किन्छ এ প্রকার शानना পরিশ্র न (इ। वहना नूमाद्र धदिएक शिलं इंशोई हित्र क्रिय इश (य भीष मारम त य शिष्मत य जिथिए कू ज्यां । कामि इश जमामि करिशा मध मारमत मिरे शाक सिर् जिथिएज निम्हत द्विष्ठ इहेश थारक, किन्छ भीय मारमत দিন সংখ্যার গণনার স্থির করা যায় না। পরাশার ঋষি তিথির উপরে নির্ভর করিয়া ক্ষি সংগ্রহের বচন স্থির क्रिया इन। जनगना विषय शद्य क्रिया

> ভারতবর্ষ ও ইংলও — সভ্যতা বিষয়ে তুলনা। (बाञ्चय इहेटज।)

हिन्दू ब्राष्ट्रब ध्रां काल इहेट्ड, डावडवर्ष क्रिय मूमलमान ७ ३१८तक धर इरे जां जि दो जव कित्री जो नि-তেছে। यथन मूमलगात्नत्र इत्ख तांज मण हिल, कजक छिलि जिनूकत्र धिय हिन्ध् मछ न उथन जा नक दिय । य मूमलगातित जानूकत्रा श्रा श्रा इहिलन। जैशाती हेजात व्यानित्सन, ठाभकान व्यानित्सन, हिन्दू क्यां उत्र युक्त म-ভার ऐस्वे रिषत পরিবর্তে মাথায় মুদলমানি পাগড়ি वाश्वित्लन, नमक्रांत भक्कि छिरोहेश। मिश्रा मिश्रा मिलाम क-रिवट कि का कि तिलान, এवर जावट लिए वार्याप्य वार्याप्य वार्याप्य वा शिविज इनश कूल वधु मिरशेत सूथमञ्ज स्थामें वाता ঢাকিয়া দিলেন। রাজ লক্ষী ইদানীং ইংরেজ জাতির श्रिकिक्षाविजा। इंश्ट्रिकारी भ (मट्यं मद्यं मद्री, (म-भाग स्वात् अ अ का भाग नि । (यमन मूमल माटन ब ब क्र कर्न करा धक मगए । श्लाघनी ए इहेशा छे छिशा ছिल ; जाहां त वावश्त, शतिष्ठ्म, জाट्डा९मव, विवाश, वाट्डाविकिश। उ खाकामि जकन विवद्श हे जका १९८० हे १८५८ जा भाग-क्षमलात जनुमत्रन करा धाइकन धा (मनी स जादनदकत नि-कार्रे (मह क्राश भाषाभी श रहेश। उठिए उट्टा अहेकन जात्म (कई जाभनात जाडीय हिरू धुरेया (कलिया अदक्रांदर इंश्टब्रिक इंग्टिक इंक्ट्रिक इंग्रेग्टिंग।

'धरे तिथ पृष्ठे इरेर्य (य, माशद जिल्लोक्योम इरेस्न नम, नमी, थान नाना, পরিপূর্ণ इইয়া, সমস্ত দেশ যে-क्रिश जाशाह्या (मग्र, हेश्दाकी मजाजात प्रकारियां जन वर (ममंदक अहेकन (महे तथ जाराहेश निक्टिइ। किरा शू वर्ष बाजधानी व छ छ । भी मा य वक छ ल, का ल करम दम र मीमा नश्चन कतिशो (मदभंत अधान २ नगदत अद्भान कट्द ; अइकल आंदम यांव, आदमत कांन शंनी उ यांव (मई शहा । जा जा जा मामाना (कान शुंद्ध यां अ, मिथिदन मिथारन छेरात छत्र याहेश (भी इशाद्ध। वाल करा তটে शांकिश जामाश म छ। कंत्रिक्छ, स्वर्कश (म् १-(उद उत्र जाशन। इहेट नोरिया श्वालाद नेतनाय मिला, ज इहेट जिए नात जी जिन्दिन इस्ति। कत्र जिल्ल क्षानिवाम क्रिया किरा विवर्ष क्रिया जारिएक्स हिलाएकत दिश किष्ठु एक निर्क करे एए हिला 1

यह शहायुक्त(प्र जागता का शादक अ (माय , नन्मा करिन। योश्रां वा वा क्रांशी এवर जायूक अद्भव शवर्डक, डाँका मित्राव रभई मिकिलां भील अ सूर्गिकिछ। डाँश्री थठ-

लिङ जां ठारततं यूलायूमकान कतिएङ मक्ष्य इहेशाएइन, এক দেশের আচারের স হত আর এক দেশের আচার,রর जुलना किहिट्ड लिकः পाईशाट्डन, এवर डाल मन वि-काद्रि देनश्रा लां कि कित्रिश्राह्म। यथन डाँश्रीरे जाशनात्र यादा ছिल, जादा उ ऐए भा कित्रा, शदत्र इश्या माँ ए। इशे एइन, जथन शहकीय मजाजाय वित्निय कोन मधु शक्तित, जाशांडडः ५३ क्रश मश्कांत इड-शाई आखाबिक! किछ आभामितात यन उथानि नि-क्लिंड फिर्श्व वावहात गांज मर्भन क्रियां वे विषया वृधि लां करत्र मा। जत्मक ममरत्र भागामिर्गत धरे क्रिश (व'ध इय (य, ভারত वर्षत ভাগাতার। यान जा-কাশ হ তে খসিয়া না পাড়ত, যদি ভারতের রাজ रिवजग्रेडी এখনও ऐए छीन थाकिंछ, यमि ভারতবর্ষী-श्वादा विश्व विश्वनाय शद्दत जधीन ना इहेगा, शद्दक व्याश्वात वाल्वलात व्यथीन कतिए श्रीहिंख, वाश्री इहे-লে, যাহারা এইক্লণ ভারতনিন্দুক, ভাঁহারাই ভারতের खिं जि भी जि भी श्रम श्रद्ध वार्त्राईन कि ति उन्न याश्री दिन्यू जाित्य मङाज। इद्दे कल १ इत श्री थ-क्लाल्य बना এই क्ला इस धामात्र कर्त्रशाहन ভাঁহারাইজগতে হিন্দু সভাতার প্রচারের জনা স্কা (श क्षानिक इइएकन। आभाषितात मत्नन धई थात्री जय यूनक कि यू जि मश्शं ड, डांश कि विषेत्र कर्तारे धरे

श्राह्य देव दिन्द्रभा। ले उद्यामिक मिट्रांत जालाशंगा श्री ७ जनत वक्ल जानाना (मर्भत मजाज। जारभक्त। इंश्लेजीय मजाजातिई मगिथिक आंपन करतन। जाँशांत्र ध्रांन युक्ति धरे,— जागाना (मर्गत जधीवामीता विद्यानीतिमर्गत मः न्यादर्भ व्यामिशा विद्यानीय व्यापात वावशाद्य व्याप्त व्याप्त विद्या ্যাছে, পুতরাং সেই সেই দেশে সভাতার যে ফল ফলি-सार्छ जारा मिल्लाभार्थः किन्छ रेश्म छ द्रिशाना माराज भालाश मर्घटणंड रव श्रांत्र विकेड ववर वह रहलू जित्रिन व्यक्ता, व्यक्तार इंश्मणीय मजाजा मिळाजातिवत लिला अ मृत्वे इस न।। वकः लग्न जानलिय अ था धक यूकि প্রথম खवः न (मायां खिंड প্রভিত না इहेटलंड, তিনি य इंखां ख जावल यन कित्रिया थी यूं जन्ते ख छ। निया व्यानिशाद्यिन, मिन्ने इं इंडिंखिन में जाजा मन्द्रम यथन मश्-भाग ताह्याहरू, उथन द्वाहात निकास्टक वाननाहे अशिकाख विलिए इहेर्व। आगानियात निकाख धरे, यिन श्रीरे उत्तान (म्ट्नित मञ्जा भेत्रकां य म्लान -হইতে সম্পূর্ণ রূপে নির্মূক্ত থাকে, সেই সভাতাভা- দিগের ভাষা ও জাত উভগ্ই মিল স্তা ইংরেজ রতবর্ষের। ইংলগু ও ভারতবর্ষ এই উভয় দেশের ইতি-शास्त्र आंख मृश्विभाज करा। इंश्लिख यथन जाखान क्रिश शक्त जाक्रकाद्व जाव्हा हिल, यथन डेश्व जिथिवानीवा शश्रुत नाग्र शार्ज राम करिक, जाशक माश्म जाजन काँत्रश (पर धार्वा क.र.इ.ज. এवं जाना इंज कि व ने विमा-शुक्र भाषीदा मखा व रिहार्श करिया, स्मिर् मम्स स्मा द्यामान जां जि उद्दर्शनद्य देश व जां धिशंजा द्रांशन कद्य. ध्ववर श्राप्त व नंज व दमत कान छेशामिशदक (त्राभीत नामाद्यत अधीय कतिया ता था। यह द्यामाद्यता अध्र दिरशिध निरक्षन ३१ल७ २६ए७ मतियो পড়िल, जगनि आ।कमा नव। शक्ष शादलब नाम्य देशा छ्रा इर इरा (यथा-त्न त्मथात्म छेशान्त्वमं स्थिति श्राष्ठ रहेन। इंश्ल-তের আদিম নিবাদীয়াণ যদিও প্রথমে সাাক্সন দিলোর विद्राशी हिल, कालकरम मार्कमदनदा जाशामिद्राव धिश इरेश, माकिमन मिट्शेश महिङ विशेष पछि अपास श्वामान श्रमान इडेल, ध्वश योठां व वावहां डांनि वियए इर्ड विचित्र जाहित यक मृत मिलामिला मखन इस, जारी क्रेश किति। (यह जावांत माक्मरमडा अकरेंक इर्जन एहेल, जात (जगमकि, नहरू प्रेड प्रहेड्टन ज ल्यू क्यांकि मरना मरन हेश्नर्थ थार क्ये दिर क्योंगिन। धरे अट्टा किंदू कोल योहेटड सा योहेटड, क्षेत्र ट्राय डेडबे खां उरेट इसी च नरमाटन श जामिश रेशन जारि

टे बत कर्तल। इंश्मणीय मजाजात व्यापात्याय मगय हेडाएंड अवकोशम्भार्य इंग्राहि कि ना, जाशा मश्क्षिण्डः श्राम लिंड इडेल; देशव विकाशमगर्य कि शविमार्ग शद्वव मध्यव घित्राहि, इंश्लिएत ममाज उ वार्गिकार्य युवक देवित्व वर्ष जादात माणि कुल मणात्रमान।

शक्षायात्र, जात्र उविशि इंडित्र जाति। क्रिता मुक्त इश (य, ज भेर्शीय जलता न दिशाहतलत दुन मुद्र इरेट ज निर्णा जिंड इरेशी, (यमन अक थाट ज भार इन इर्गाह, जातजीय जार्थ। वर्षा निर्मल (जा ज (मरे व्यानिय कोल इहेट जे जिल वक थाए ज व्योगिह ज इहेश्री ত্যাদিতে ছ। চ'ন. তাতার পারদিক আফগান প্রভৃতি विक्रिविछ (मण मगूर्इत श्रीजन व्याधिवामीत्रा, ममख्राम । । त मण्यायाय इहेशा मर्भन कि त्रिश्राह ; (क इहे छो ध्यवाङ म्मार्भ करिए मार्रभी इस नाई। छात्र वर्ष पत्रा অসুর প্রভূত অসভা জাভিয়েরা, প্রথমে বিরোধ ক-रित्रा भारत वार्गवाह्वरल मस्या भ्रां जिं इंस छो उ-চিতে इंड्डिशलायन क्रियां इं वार्यामित्रंत महिं (कान कर्ल मिल्जिंड इंडगों मृद्र थाकूक, डें। इंडिंग (य-थात्म जावसाम क्रिट्जन जाइग्र जिमीमाट भामठात्रणा करित्र अधिकात भाग माई। आशा २९८ नत अञ्चामत्र-काहिनी अवश्म डाजांत इंडिश्म इहे लंड किश्वा ठाति भाज विश्वतित कथा नर्छ। (य भाग्रिम लईशा-इरिशा-(रा: भर भण्डि ममाज इमानी वा वा मह इहा। एडन, जारा भ्रस्त्र जार्डित मर्जाधक वरमत भृत्य कार्या किट्रांत रुपत कम्म त इरे. ज महत्य थातात्र किः अरु इहेश श्रकी शावज क त्रशाहि। जातजीय जार्याया (य कार्ल एक मृत्ल कि.सा প্রमन्न मिलला हारूबो कि नर्मात डेल्इल ममत्व जात्व डेल्व हेशा खावन खाँ शांन क्रिट्नः; य क्रांट्ल डाँश्री क्रिडात णम्डाञ्चत नश्न बिष्ठ किर्या, रालाक (मोन्द्रा दि-भाहिङ इरेट्डन, छल ९ णिश्र वन्मना क्रिएडन, अर्९ खल ভারপুর শ্যামল মেহমালা সন্দর্শন করিতেন, डेक्श्रक रे डिशकारी वस्त्र ड्वाल क्रांड क्रांटिंग क्रांड क्रांटिंग द्रिय म इंड जा जनमन क त्र जन; (य काटन जार)-मिट्यात मर्था निया জिल्लास इरेज, ध्वर ऐशायास, छछ। म तथ ऐष्ट्रीय देलालित निथत (माल माजा इस्या, लाहारक मर्नन, नीजि, शाश, श्वा, देहकाल, পরকাল, এবং পর্ম পুরুষার্থ বিষয়ে অমূলা উপদেশ एखत अक कूल्लन काशामान हिन्न (शोन्नशांचक धोदःनः, এद ए इन्द्र जामि एक स्योगान का छि जगर ज मनूया জाতि विलिशा পরিচ। লাভ করে নাই। সেই চিন্তাত शूत्राण काल इइएड, य्वनाधिशारमत धाक्त काल शर्माख जाया मि गत (य कान विषय यात्र यात्र कि ह छेन्नां उ इडे-য়াছে, তাহার সমুদ্যই তাহাদিগের ভিজের। তাহা-मिट्रात्र ख्यान देव छव, डाइगमिट्रात धर्म लाख, डाइगमि-(शः क्वि शक्ति, वािला ह्रांख, युक्त विश्वम, ध्वः माभाकिक द्रीं उनि निष्यु (मणीय कार्या জাত তক্তর স্বাভাবিক ফল। জগতে জায়া জাত য় विस्ता (य (कान रख नित्म को नता याश, जाराज श्वमन्त्रादर्व शक्ष माज्य व्याखं रहेदव ना।

ভাষা ও জাতীয় रक्षन দেশের সভ্যতার মিশ্র ভাষ किया जिम्बाजात । जरु व्यथान श्री का छ्म। इंश्रिज क्या इंश्लेश इंद्रा शिशाट्स, जांदा क्रिक् के निर्वेश करिए शार्त ना। इंश्ट्रकी ভाষা क् क ভाষার लक घारा शिक्ठि इस्या (इ. जारा शाग्या इम्द्रिय उद्ध जार्भ वर-शावन कवा, जाशाज्ज विह विकलन शांटज मित्राव शायन-७ दः किन कम्म । किन्छ जात्र उपनेश जार्था कि। शत्र जाया उन्नन ଓ जो जो श वन्नन छे छ য় रे धमन पृष्ठ छ छ। छ मा । य हेर्। ७ शतका शद्यालात महारमा अरो । (यमन युमलमान श्रञ्डि (कान जार्डिंड कान काल वाना इह-তে পা त नाइ, तमइ त्रभ लाहिन, जीक उ वात्री श्रृं (कान डायात नक मर्फ, ड नक म(धा छान डाया छान এবং অম্বি অপ্সারিত হইয়াছে।

इंश्लिश (य रेमानी शमरल में जा ज्या क्रांजित निंता प्रमा विनिया भागा । इंडिंग इंडिंग विनिध्यामिछ। जाय-खबर्धत माडा छ। दिसदा । विष्ठ राक्ति । भेश्या वरत्वम ना। बहें डेंडा में शा (काम (मत्भेत्र मेंडाजा) वक्दलेंब युन्जि मार्गः यूनाद्र, आउदा छन विनि छ, जामबा, उ अशुका जाशा धार का मार जिरे मीमारमिज रहेटज भारत। निवा धवर वाशिया धरे ए छ श्विम म छ। छ। स- दका नहीं छ्दक के ज १ (मटनांत क्षिक कत कला। निक्स, कामता उद महरका वह कला कान रेड वाङ कहिलाम ना। का-জে! এড়ত কভিপায় পাণ্ডিত মিশ্র সভ্যতার ওণ পাক शाहीः द्याद्य जावात जाल्या महाजात कर्षाता वादान

করিতেছি যে. যথা রীতি তুলনা করিলে, তাবশাই इंश्न छो स मा छ। जा कि मिल भिनार्थ छ जा तज विस मा छ। - १ তাকে অমিশ, विलिशा खें,कात कित्रि इहेरव। ध कथा मर्त्थ। जथकनोয়।

वर्ग-राज्य शकर्ग। (जज़्रवाधिमी शिद्धिक इइं.ज।) পুরাকালে ক্রিয় বংশোদ্ধের হত্তর ব্যক্তিগাণ যে वामाव थाथ इन्याहिल, जम् त्रा के कि थूर्स ऐसि-थिउ इहेश्राह्य। शहस्य काजिय्यान धक ममत्य वाकान यद्धित मर्क (क्षेष्ठ) (य स्थोकात करतन नाई, जाइनिव ভূরি প্রমাণ শাম্রে প্রাপ্ত হওয়া যায়। মরুদংহিতায় पृ दे इश, (य (तन न्ह्म, शिष्टान, श्व स्माः, सूर् এवर निमि এ मकल तां जां यिनो जांचा अ बका प्रशे ছिলেন, তজ্জনা তাঁহারা বিন্দ্ত হয়েন। रिका, १ রাণ छ इतिवर नाहिश्व (वन त्राङ्गात छेन्। भारन एक द्रा-জोत गांठादित कथा मिविट्यं वर्षि जो है। दिव तो जो क्षात्र व नामक श्रम मनू इहेट नरम श्रक्ष ছिलन, निड स्रोग भिवृत्र एका विख्यक इहेग मांव धक (यायगी श्राचेत करितला (य, जारात त्रांत्जा (कर पिनजारापर हेटमः म युड्ड (इ।म उ मानामि किशानूकोन करिएड था-রিতেক না, যেছেতু তিনি স্বয়ং যজ্ঞ পতি ও সকল खावन माज बाज ममत्न देशाञ्च इहंशा वह शांक वा (मन दिं क करा जना जून एक रहार्थ जानून गरक व्याहित्नम, किन्छ मन्ममिणि (वर्ग भिष्ठ मकल श्रीय-वर्गका किष्ट्रमाज कर्षभाज ना कर्तिगा शिर्वज खरत किष्टलन, जामा इइटि (अर्थ जात (क जाटि ? जामा जिन कि जात आंताधा इइटि शादा ? (जामताया अवश्व व लिया व इतित वर्णन क्रिटिंग्ड्, (म (क ? बक्ता, क्राम्न न, क्राम, हेन्स, तारा, यम, त्रि, बक्न, श्रांजा, श्रांग, शृथियो, हम देश मा मकल्ल चुभा जित्रका ती त्र का त्र भा ज भार्ष (मर्ग मत्र इत् मा भाषि । धाई भक्ल बाका खबर्ग क्यार्भ क्यां बिंड करलवंद इदेशन ववर मकरल एक व इहेश। कुँ इन्द्र खोग दश कतिरलम । "बहु द त्रांका त हे भाशा (न लिशिक वार्ष य, विनि धेर्या गमगं इहेरा बाक्य किरात ज्यमानना कर्नार्थ महत्य हिजारा कर्त् क जार्थान निर्वायको वहन करो देश हिन। ध-कम। निर्मिक्श वर्शक अक वाक्यन क शमाधां क करोश वाकाशा धकाल के के इहेशा छ। हारक बकार छ प्रात्र जस्मा९ कर्रन। याम अ अइ मकल (भोतां गिक त्रां ए जितिभी जिल (विस्ते। म्यांजिशानित विमान व्याखि उ इर्गाडित विवद्र शक्डिंड इरेग्रा खायान वर्णत (गोडर इक्ति करी इहेगे ह किल जन्म रा देश अ अ जिल हरे-(उट्ह (य जाँउ প্রাচ: न काल क वग ताजान कर्ड, क बाक्षणश नर्त (असेन) मर्तियानि ऋलि स्रोहन इहेन ग এवर অবেক হলে ভূপতিগণ বিপ্র বগের প্রতি অনা_ मत श्रकान कित्र जन, उ उ ९ श्रवूक वामानशालित महिल (शांत्र विवाम घडेमा इंड्रा शांख व्यत्मक (ज्ज्ञा) क्वित्रंगन स्र त्र साजाविक वृक्ति उक्तित श्राजात्व (धा-रिका लांच करिया वाकागराभित्र हेशाना ছि:लग। জনক রাজার ইতিহাস এই বিষয়ের একটি प्रकोष अक्ष विशाहि। শ्वभ्य वाकाल डिलिंथड আছে যে শ্বেতকেতু তাকণের ও যাজ্বল কা নামক ঋষিত शं. शत् महिं जनक ताजात माका ए इंडारा ताजा जाहा-(म.त ए (जाक कि जा जा ना) कि तिल्लम, (य (जामता) कि প্রকরণাসুসারে অগ্নিছে তা যাগের অনুষ্ঠান করিয়া তেছে, কত জাতায় লোক ইংলতে বাস করিয়া সময় থাক। তাহাতে প্লাৰগণ একে একে উত্তর প্রদান করি-ल পরে ভূপতি কহিলন, তোমাদিগের स्था কেবল यां अवदल्का कर्शाक्षद क्राट्म अधिरहाज भीमां मां कर्रहरू मगर्थ इइशार्ड्नः किल जिशिर्द्शावत ऐ९क्शिल, गार्ज প্রতিধা, ভৃথি অথবা পুনরার তি সম্মার কেইই জ্যুত नट्र। এই विलिया अघि यां प्रविचलकाटक तांजा भंज (धरू मान कि त्रिया त्रादिशक्ति श्रम्भ कि तिल्लि। जनस्त वा-काशभा अवस्थात कहिएक लाशिएलम, धहे राजमा जामा-मिश क शांका श्रांचन करिल, जाईम जांभग देशक बक्त विषयक विठादत आंख्यांन करित। या छवननका कि च-ल्लम अवाङ्कि राजमा, जामना जामन। इश्कि विठादि थ-नाई। यहे श्रायिक इहेशाएक, जमनि धर्मा शांक्शाएक, तांक्य करांक गांत्रिल जाभारमय किलांक इहेरवक ? किल याम এই राष्ट्रिक कर्न्क जायशा भाषा जून इसे, जारा इसेट (लारक कहिर्द (य এक জन রাজना वाक्त शरक भराख कः तिशाष्ट्र ; ञाज अव अ धाकात कार्या इः एज विश्व थाकाई (अंग्रस्त । भरत योक्तवल का स्वीय तथारवाइन कित्यां জনক রাজার অনুসর্গ করত তাঁহার সান্নকটবর্ত্তী হইলে नज्ञां ज जाशाक (मिथिया जिल्लामा कितिलन, (जाया-ख्यम्का । जुमिकि जांशदश्व निका कित्रया अभाका कि शाक् ?या कवल का कहिरलन हा। जा हाट जनक बाजा न वाद्यद्याद्वत मि द्वाय मम वर्गथा। कितिद्वाम, धवश्याक दल्का उद्बावर पुरु इहेशा बाकारक वब थार्थना किश अञ्चरक्षां क तिलाम। जूश ज क इटलम आधिम भ रे वह छो। (य जामि यथन (य थान जिल्लामा करिन, जामात ज्ञि थानांच करिरव। जनविध छ,नक दोजा बाक

जरजरा, (लः गवनत छा इ उ । यस । न मार्ट्रा वाशील ना मुख्य व का त्रा िलन उथा उ हे १ ता जिल्ला त वश्वगाग वल डाश्वा शिवनाय जग ल ड क तिद्व । या श्वाता शिया तम म द्र वत विश्वक भ -(एत ऐएए भा मकल इरेश एए। जो होता এখন जात (काने कथा विल वन न।। এ (मनी ग्रामन यिष धथन 3 अ विषया किन छे जा भी आहम, अर्ड जल्ला मित्नत गःशा जाशात्मत जे.मा गत जन न १ इहेरव। हेशांपत विशंक मल मग्रस অপ্রতিহত ভাবে शिशाम मार्टित्व शंक मगर्थन कित्विन, ভाशाता ञावात देश्तांक, व तिनीत्रांन व्याका महत्व खः न व नवान धवः (भाष जा व क्य कि माइविनिग्रक (क)न विवद त (क न क्रथ भाष्डि पिट अ। तिव न।। इश्लिभागान প্রভাৱ জয় इइ.व किन् जय इडेक कृति। नाग अरे यकमा या या मण राज या वित निर्ह नामश निशाद्यन तमशान इहेट जात डेरिट था-রিভে: ছন না। এদেশীয়াণের ও ই রাজদিগের এখন যে সম্বন্ধ इहेश'ছে তাহাতে অবিচার इछेक खात चारहात इडेक, धरमण (युत्रा क म व्यागर्र इरेटा धव मा इवा कटा लड़ा छूड २रेट वन । यनि মিয়ারদ সাহেবের ন্যায় আবার কেছ অভ্যাতার क (ब्रन, व्याह विश्व मार्ड्दिव ना। य (क्रान इंकिंग लिशिक कार्तक करतन लाश इश्ला आंगारमत कुं धवर लास्कां जां. इत्त नाश यि विठात क त्र ज ज इ इ इ दल उ जा भारत कि ज । माद इ द्वरा य ज जा विद्या गांव ज गांव व गांव कि तित्वन उठ रे जागा। किना इहेव जव या जेका इहेव जं जा शिंप गरक जयन क्रिव।

मिथा निष्य मग्राधि शब्बलिं इरेर्व। मकल्ब र्वात्व थाकि ज भारत (य, मर्फात महोतूम योकूव था আবি । इहेल डाइात জन कर्यक भाषात हिता छ ভिरूथ शाविज इस । आधित हेश मिश्र क शतिवात नि-विज एत थ्यंतन क. न किन्छ इंडाता निर्दाष्ट्र हिताए (ला) हिशं एहं। याकूर थाः निन्ध हेग्रांव था डांहात का । इंक्षित कथा अभिया हिताएँ यूष्त्रत मञ्जा कित-তে আরম্ভ করিয়াছেন। তিনি যাকুব খার শতর आগ। शादक তাহার অনুগত করেকটা জাতি সমতি-वाशाद वाबिलाम हिताए शिहिए लिशियाए न। ध-তি জিল जिल्ला निकारन निकारन जाना कि जो का कि जो टेमना म यख शार्शित्वात नियं िथिता शार्श्न श्राष्ट्रिन। मिछोत्नित मिलादित श्रुष्टित मुख्य योक् व थांत्र कनगत निर्वाद्य कथा इरेडिए युज्ताः जिनि योक्व शैंकि महाया क तित्व छों होत कोन मत्म र नाहे। তিনি পারস্যের সার নিকটিও সাহায্য চানিয়া পাঠা-ইয়াছেন। গিরিক প্রভৃতি নামক জাতি ইয়াবের मदि आमिया विका किशादि । ইয়াৰ थ। মির আক-वत आश्चमन भात शूज उ मिवानिन भात शूज उ ভাতাকে काताकक कतियाहिन। भारियोक पूरे जन आ यित्र (णत आलित शेका इंशादित मांशाया যাকুব খাঁ আগমর কর্তৃক বন্দী হন। নেটিব প্রলিক अधिनशान लिथिशाष्ट्रन ७३ घूरे वािकरे हिताए बन्ती इहेशां छ। इहा निशंक आशित हिता छ अधि-कात कतात निमिख (थातन कदतन। हिताएँ त अक জন কোভোয়াল যাকুব খার সঙ্গে কার্লে আ†-इतिन। जाशित धहेवा, क्लिक जिल्हा विशाम कर्ति-उ (जन। ध वर्ल य मि हिवारि डेशेंड इरेशा धरे क्षण एक क्रिंदि य योश्यूष ७ षिल थे। व्ययाशास्त्र हिताहि अधिकांत कतिए शांतिएवम। हिताहित करसक জোশ দূর হইতে এই কোভোয়াল পলায়ন করিয়া

हिना हो जिला इं इंस विव हो कि इं इंसा देसा थारक म यू म श कथा दिलिशा (म श । जिनि ज क क । ९ यू क त मङ्जा करतन थ १ का लाग आंत मगूम श श्रीत । व त क्रम करियो (क्रिल्ल। (क्रवल এक) प्रांत (थाला शांक। इंशंड शंत फिरम थाता हिता जामिया উপস্থিত হন। তাপরা ভবিয়াছিলেন যাত্র थांत शकीय (क्ट जांदात विश्वापत कथा जान नारे কিন্ত উপ স্থত হওয়া মাত্ৰ' তাহানি।কে বন্দী कता इয় এवং वनी का য়। তাহার পর ইয়াব খ, ভাহাদিগকে জিজ্ঞাসা করেন যে ভাহারা কি মনে क निया छेल न्यु व बहेश हिन। हेशन था जरकार ত। इ.त वा भी स वक्ष व क्ष वर िक है व्याभि तत विशेष घां जक जांत कथः প্रकाभ करत्न। जापित देखि गर्था थ व निन योक्व थारक निकरि छाकिया दलन य তিনি হি া ট লিখিয়া পাঠান যে তাহার পরিবার कांबुल्ल शीट्छ। यांकूव थ. ७ छत (नम जारित मार्ट्य, व्याभि शृद्धि अवग ज जिलाग (गृ व्याभाग वार नात প্রতিজ্ঞা লংঘন করি বন এবং আম কে কা । कদ্ধ काित्न थाः थाः निन्छ आयात जाजाक आयात र्थो। । त र्था ठोइरा (म उर्शात । न म ज लिश्शाहि। जा-यित এই वाक छेछत्त ভারি রাগা चिक इहे । वालाह न य यमि योकून । जुत ভাহার পরিবার কা লে न। लरेशा आहिरमन তবে তিনি তাহার ছ जी ठकू छे९-পाउन कहिए न। পिত त कथाय किছू गांव भक्ति न। इहै. 1 याकूव छेखत (मन य आ शनात यां हा हेका छा-शहे कबन, आंग जानि आंगत माश्या लाक डेश-न्धि इहेरव। आगित ७ शत देमन १४) करक हिता है অভিমুখে স্বলৈন্যে যাত্রা করিতে আজ্ঞা দিয়াছেন।

वांतू खड़ (यांइन पछ (व प्र के के किर्यंत निविछ ष इ- जी ছाज वृज्ञि थानान क्रियाए इन जारात नि-जिल (लक. ६८-१६) भव ति मारखाय প्रकाभ श्रांक उँ। क शेख लिश्सा इन। वाथतगा अत गाजि-(क्षेष्ठे माह्य अरे विषय लिक हिन है गर्व देव ता।-हत करवन धवश (वन्नाम शवर्गराधित ज्ञिनशात (मटक्र होति माजि है कि जा गंज कता है। एहन (य, खिक रिगोर्न वावूत ७ रे मिर्कार्यात निमिल (लः গবর্ণ অভিশয় আহাদিত इইয়াছেন। বারু ত্র-জ ग इन म व ध म व स्क्रा व्या गार्म व निक्रो शन পাঠाইয়াছেন ভাষা সম্ভবতঃ আমরা আগানী ভ शकांका कि व ।

वन्मी वाङ्कि (य नाना न हर भि विषश्य मक ल ध व िक मश्रक्त श्रकाभा कि अश्रकाभा क्रिन ज्ञश विठात कर्ति एए इन न।। इंश्तां क काकित कित किराध्मा वृत्ति अक्षिविकः श्रीवन, जावात जाक्षिगरक य नाना এड लाकुना उक्छे (एश डाइ कि इाट ड পাইয়া ভাহারা হারাইলেন, স্তরাং ভাহারা ষে मिन क उक खशान ह यू ई ध त्र क र त्र व इ द्र कान जून नारे। जिल्ला युवि धरे शकाश यांन। व्यानादक । এখन हे विलिए व्यात्य कित्राए इन ষে তিনি গোয়ালিয়ারের তুর্গ হস্ত গাত করিবার निर्वित गरर्न(मएन्डेन मद्भ धरे । थना (थदनन। आवान (कह (कह विलिए उप्ति जिसि जामल नाना क शहन किञ्च डोशंत शहिवदर्छ धक জन জोन नाना थोडा

भारद-मह्ता जिनी नागक এक थानि ना छेक मगा-लांहनार्थ वानदा थांछ एरेग्राहि। एरे शुखक थानि द्रशीमाम वाब डे बमर्श लि थशा हिन एक, जिनि छै। ची खार्थ यारे वारे वारे वारे

(मत शत्रमा शीर, वन्छ छ। शता ५८ क छात्रमङ्गान कि । য়। দেখিলেন তথাচ তাঁছাদের কোন মতে স্মরণ इहेल ना (य धूर्शामार्ग मांग नागक डाँहाएमत कान वाची श हिल्न अथ । धक्र श कान वा क्रिक म अ হানের পরিচয় ছিল। যাহা হউক ছুগাদাস বাবু शिनिरे इफेन, धरे शुखक थानि छे । मर्ग कि तिशा (था-প্राइदेरगणक िनि य शिक्षे मनानि क रिया एवर পুত্তक थानि छाछि छे॰ क्रिके इहेशा ছে। श्रन्थ कर्छ। श्राप्त्र प्रिथ २ शाष्ट्रन य जिल्न धक जन यो भा वार्कि। यो भ-ला जांग्र व शर्माख यक छालि नाहिक लिथा इहेश ছ ত হার মধ্যে এ খানি সর্কোৎকৃষ্ট না হউক, তুই এক थानि वाडीड हेश जारशका उदक्छ नारेक এक थानिउ व्यम्गा विविश्व इय् मारे। ए स्वित कांग व्याना वार्म गात्तत विट एन स शति जाता कता छ छ छ छ छ । हेशत रखिता (প্राथ रेवेतरान्क (प्रश्रेल क मगूप्र छिलि ना थोको मञ्जावना छि। प्रशंकाम वावूत शु-

थानि छे मर्ग क बि। ब शूर्व्स छे था जिन रिगा क धक्व ब ज ना न छ छ छ छिल छ ग नाम वाव शुक्क थानि बाहा ज्लासे क्र श (एथा देशा हिन । य यज का तला । वाषा एउ छे दक्षे श्रुक लिथा याय ।

य क्रा शं िक के लि आ सित मसून श्र लवन वितम इरे ज आंग नि रहेरव। शंज वर्म तित श्रेक वर्गत हो नि इहेए इ जामा ७ लक मानत अधिक लवन दर्शात्र इ.ग । ১৮৭२ थुः व्यक्त हेरोलि इहेट. न (मिट्र ए० १२) यम लर्ग छ १ दिन ध्वर हेरांत यह था मिथानकात जाममानित श्रीयान এ वृद्धि इहेशां छ। य (मट्नं विश श्रीय व्याप्त मान्न मान मितिए जिल्ला वार ल न न न वाशांत, (म । मन्ति। मी-व्य विद्यानिया निवास कि त्री विद्या कि त्रिक इक्टिक्ल ! क्रां ग्रामनानामात्रात मगर्य अ । তবে যুসলমানের। অসভ্য ছিলেন, তাহাদের সঙ্গে सम्राह्य है त जिति गत जुना कता जान्निकात को ज।

इ र्डिक डेशलक २८ श्रांशांग्र याहाता (लाकित माश्या कटान डाइएमत नायत (य डानिका श्रकान त्राक कूगांत तां । (होधुतीत नांग ना (मिथिया जांगता व्यान्ध्यानिष्ठ इहेलाम। ताक कूमात वावू ध्रे उपलक्ष विखन बाग्न करन्। वांक श्रितन जिश्री नाजिए डेडे वांतू गश्यि ठ ज शाल उँ शंत मश्च शं भी गरिया छ (ज्ञानिशान तिशो है करतन।

— धः क्रा तां छ य क्रामश्रात श्रात्य शाहरमात मा भगव थात मारागार्थ शिगार देमना दश्तन क बिट ... । भ मस्ति कि पूत्र म जा जारा जानिना। তবে क्रिमशाभन का ला প্রবেশ করিব র निविध अदनक पिन श्रुराश अनुमक्तान कतिए-हिन। जाशामित मिरे श्रामा छेथा एक रहेशाहि। वावात धरे क्रथः त. डे य शियगां ज व्यवाजक का डेशियड धवः चित्र व था क्रियामिटशक माश्या हाहिश शाठाइয় ছেন। রু নিয় গণের ভারতবর্ষা ভিমুখে জাগ-মন করিবার হাতরাং অনে চ পথ পারিস্থার হইয়াছে। এখন প্রায়ত যদি ক্রিয়গণ স্বয়ং কি ভাষাদের शक इहेट शांत मात मा कार्टन डेश इंड इन ध्वः व्यागित मात्र वाणित मात्र युष्क श्राव इन छ। इन इहेटल आगार त शवर्षिण कि को लल करल्यन कहिर्दिन? कांदूल मञ्चल्क श्रव श्रव श्रव । कि उथाय व्यवन्यन करियाद्वन ज्ञात्वन ज्ञानि श्रकान भाग मार्ग गवर्ग जिनादिलात रेर्नि । ज । ज । धवांत शिखक विद्रान्ध वि.लो एन कहिए इइएव खारात कान ज्ल गाँचे। याकूव था दक वन्नी कर्तात मुली ज्ल का त्र भा त्र श्री का विषय का त्र ना इडेन डाइ। त कथा जन्दम (य गांकून था। कांबुल डे शिष्ड इस मिड বোধ হয় সভা। মুভ্যাং ভিনি কার্লের আতা বলহ । नश्र छिक ति उट गारा अहे मर्म रामन कि ति सार्व शिजा शृद्ध विवास थाकां स कार्लवामाता वन्तान इ-इंटि शांति मा पार इंता जा जारा निग्रक नहेंग क्रिंड। क्रिंडिन। ध्यम क्योग्यत्र क्रिंडी इडेन क्रांत य क्व था जशी इडेन, कार्न अंक ज्ञानत जा शकादत कारिलरे भकात विवस । या कृव थात शालक यान कि मिशा उ शांत्रमा कल म तन कः न छारा रहेला हे शा-उत्तर्शानामामा श्रामा । प्रशांक मधाव धारे शुखक थानि। एकता उत्तर का का वार्ष वर्ष वर्ष । देश्ता का ता वहें शांबकांत तथा याहें देशांवक उर्भा कात्रां हिन । ने शतक श्रम कक्न व घरताः। व कि जाहार वत

The attention of our subscribers is respectfully drawn to the alteration of our rates of subscription. The Patrika with Supplement is now priced Rs 8 As. 8 and Rs. 10 a year for the Town and Muffsil subscribers respectively.

THE GREAT NATIONAL THRATRE.

BEADON STREET PAVILION No. 6 COME ONE AND ALL The most Successful hernic Tragico Comedy. SHOTRU SHUNGHAR OR THE GREAT WAR OF KOOROOKHETTER

> শত্রু সংহার কিয়া মহা কুক্ কে: তার যুদ্ধ Saturday, the 19th December, 1874. Play to Commence at 8 P. M. BHOOBUN MOHUN NEUGY,

Proprietor.

THE AMRITA BAZAR PATRIKA.

CALCUTTA: -FRIDAY, December 11, 1874.

We are really surprised to hear that the students of the National school will not be allowed to compete in the Gymnastic Mela to be held soon under the auspices of the Lieutenant-Governor. To hold a Gymnastic tourmament without the students of the National is to perform the act of Hamlet without the hero. We do not think that without the trained students of this school the tournament can be made worth sceing.

We congratulate the cit zens of Calcutta on the appointment of the hou'ble Babu Degamber Mittra to the Shrievalty. We owe this concession from Government to the Chief Justice Sir Richard Couch to whom our best thanks are due. Dr. Narayn Daji, the brother of the late Dr. Bhau has been also appointed to the Shrievalty of Bombay. Both these appointments have given universal satisfaction, and though the appointment of Dr. Narayn has not been approved by a certain section of the European community, not a single dissentient voice has been raised against the appointment of the Calcutta sheriff.

Burdwan has received Municipal franchise. Considering that Burdwan was one of the most oppressed Towns in Bengal we are exceedingly glad to learn that the people of that Town will be able at last to mauage their own affairs through their own representatives. Municipal oppressions at one time were carried to such a height in the Town that the people to protect themselves tried to form themselves into a rate-pauce association. The movement was first ina ated by that energetic Sub. Judge (____ wan, Babu Digambur Biswas and the public that Town owes its best thanks to the Babu. Thanks are due also to the liberal minded Magistrate and Commissioner of the Division who backed the prayer of the people. But our pleasure has been more than counterbalanced by the ill-success of the citizens of Dacca. They too applied for the boon through their People's Association. A second memorial was submitted by the ratepavers but strange indeed, the Government refused to accede to their request! We all along entertained the foolish notion that Government is really anxious to grant municipal franchise to those who wanted it. This notion originated from a belief in the utt rances and good faith of our Government. We were loth to believe that Government could make a promise with the intention of breaking it immediatly afterwards. Mr. Lely of Bombay says that the native press distorts facts and attributes bad motives to Government and he prop ses to distribute broad cast a Government organ-a Moniteur—to counteract the evils produced by the native Press of India. But can Moniteurs justify such an act; we would like to see Mr. Lely himself try it? What a fuss was made about this "Municipal self government!" Sir George even now boasts in England that it was he who first granted the boon of Municipal self government to the natives of Bengal. Yes, such a law was no doubt enacted, and so it was ruled that natives without passing any evamination whatever shall be allowed to enter the Civil Service direct! It was three years ago that Sir George trumpetted forth his municipal reform to the world with an energy which well nigh drowned any opposition that might have come from those whom it most concerned. There was however a fearful array of taxes which accompanied the great boon of municipal franchise, and the people being poor, naturally preferred Municipal slavery to the pay- Tyery much liked by his superior Mr. Taylor the ing of so many taxes. The viceroy came to the Magistrate; but one passion marred his usefulness, rescue of the people, for which blessings on his the passion of gambling. He gambled away his

shoulder, and the people were saved. But Sir George was determined to be generous and he promised that if the people hated taxes he would grant the boon without them. Sir George was only anxious that the foolish people might undervalue the great boon granted to them and not avail themselves of it. He himsef introduced the elective syste n at Serampore and was delighted to see the success of the scheme. Now the people of Dacca, next to Calcutta the most enlightencity in Bengal, want it and his successor flatly refuses to accede to the request of the citizens. May we inquire what would the proposed Moniteur of Mr. Lely say under these circumstances? The people of Dacca committed a fatal mistake. They should have first paid court to their Magistrate and Commissioner and waited upon them. They should do it now and if those unc onar es still refuse, we dare say Lord Northbroook will do them justice. We hope the spirited people of Dacca will not be cowed by a single rebuff.

The following is from an esteemed correspon-

dent at Shillong :-

Mr. Roussae, as you are aware, is a Eurasian. and naturally likes Eurasians more than natives. There were all along native Postmasters at Shillong, but since Mr. Roussac's appoinment to Chief Inspectorship, Eurasians have been brought from Chandernagere, and posted here. The pay Rs. 75 to 95 is quite inade quate for Eurasians, and so Mr. Roussac has applied for an increase in pay from Rs. 110 to 140. The first Postmaster that he brought, though quite ignorant of his duties, was very obliging and hence tle Public had nothing to complain. He fortunates ly received an app intment in the Dy. acctt. general's office, and resigned his appointment in the Post office. Mr. Rouss ic was thus put to a great dilemma as to where to get another Eurasian. He sought much but couldn't get one, so he appointted a native, an undergraduate of the Calcutta university and who was then serving in the Gowhati Post office. No sooner he came to Shillong, than he heard from the former, post master who is said to be his relative, that Mr. Roussac has a friend by name Mr. Dassier to provide with. This Dassier is a dismissed employee of the East India Railway Dept. and never saw the face of Government service before. But Mr. Roussac has none to check him, he is all in all in Assam, so he wrote for Mr. Dassier at once, and put the Babu whom he brought from Gowhati only in temporary charge. Sometime afterwards Mr. Dassier arrived, and the Babu was consequently removed to an inferior post with much less pay. This Dassier with little education became a great pest, and commenced to insult gentlemen spec al y natives, right and left.

I had an occasion to go to the Post office once. A parcel was sent to my address on the 5th of September from Ooterpara which did not reach me, and to enquire of it I went to the Post office. I'he Post master said that he was not to enquire of a parcel which has not reached his Post office, and that the same will be delivered to me when it arrives. His uncivil talk did really annoy me, so much so, that I repented for having gone over to the Post office, instead of of sending one of my men with a chit. The Postmaster also showed me the rule of no admittance, when there was one of his Eurasian friends standing in the room. I came back slowly and reported the matter to the Director General of Post offices in India direct. I mentioned about the the disobliging conduct of the Post master, and the fact of his being either a friend or a relative of Mr. Roussac. The Director General I hear has called for an explanation from Mr. Roussac, and Mr. Rossac has called one from Mr. Dassier. Now Mr. Dassier is helpiess, though his friends assure him that nothing will come up on him for such trifling charges, and that he can bring law-suits against me for having maligned his character. In the meantime I found more of his mistakes, and asked him for explanation. He is now quite embarassed, his friends also have left him. He sent his assistant over to me to apologise, requesting me not to report any other of his irregularities to the Director General as that would give me no earthly benefit, and would ruin him. He further said that he has no Eurasian friends, all his friends are natives. The next day he confessed his own fault and promised to correct himself. I pitied him, and told him that if he continued as he promised I would not trouble him again.

There is now a proposal for starting regular daily mail steamers from Goalunda to Debrooghur. Mr. Franklin Prestage has submitted his proposals to the chief commissioner, who has sent them to the Government of India with his recommendations, whence no reply has as yet been received. The scheme if sanctioned would greatly benefit the public, as Mr. Prestage proposes to take passengers from Gowhati in two days earlier to Calcutta, and to deliver us all letters two days earlier than we now receive.

Babu Srish Chunder Rai 2nd clerk of the Magistrate's office at Pubna got a small pay, we mean small in consideration of his requirements. He was a very good officer and was

pay which as we said was too small for his burning passion. Money must be raised however and he adopted the simple method of forging bills and cashing them. Now as Srish Chundra was entrusted with the cashing of pound and ferry fund bills and refund of criminal deposits he found the game easy enough. He obtained money easily and gambled it away, till at last he was detected. Mr. Taylor took the matter kindly and gave hopes to Srish Chundra that he would be let alone if he would repay the sum that he had stolen, which amounted to 3,200 Rupees. Srish however had gambled away every thing and he had not a pice to give and so was put to hajut. But this did not help Mr. Taylor in the least, for as the responsible head of the district, he was bound to make good the loss to Government. He felt it rather a trying affair to part with about his two mouths pay and he resolved to squeeze the money out of others. Now there was a gang of gamblers at Pubna and Srish gambled with several; but the Magistrate selected two from the party, and confined them. in hajut. These two were Babus Brojo Nath Mozumdar and Jadub Chandra Dass, the former a rich man and the latter a man of some substance too. They were required to make up the loss and at the hajut was rather a hot place and the men had money to pay the former got his release by paying Rs1400 and the latter 500. What measures the Magis trate took to realise the rest we know not. The case we need not say has excited a great deal of interest and the wondering people ask ef each other what next and next? We fancy the Magistrate held those gentlemen guilty of the knowledge of malpractises on the part of Srish who is a poor man and got small pay. At all events these gentlemen ought to have been tried in a court of law before being fined so heavily. This is we fear one of the latest. developments of personal Government in augurated by Sir George Campbell.

CIVIL APPEALS BILL-The defectiveness of the lower Courts is frankly admitted by Mr. Hob-

house. He says; -

There is again another matter, one of great importance, which is common ground between myself and the memorialists. They insist very strongly on the necessity of improving and strengthening the Mofussil Courts. It is no doubt a most important subject far more important than any contrivances whatever about appeals. When I addressed the Council last June, I expressed my own opinion as clearly and strongly as I could to that effect, and though it is true that I was speaking principally of Courts of First Instance, my remarks were also applicable to. and intended for, Courts of First Appeal. But how to do it? Aye, there's the rub.

There is one point to which Mr. Hobhouse should have laid particular stress but that he did not. It is not that the Judges are fools, or idle. or currupt that the lower courts are defective, but because our C'all eceive no legal training whatever. He says "the Pleaders and British Indian Association do 1 t tell us how they would improve the Courts. The Rajshahi Association do, and I will read their recommendations to the Council." The suggestion that is made by the

Rajshye Association is this:

"They would therefore most humbly suggest the following scheme. The special appeals being abolished, the time of the High Court Jug s thus saved may advantageously be employed in making circuits for the purposes of sitting with the District Judges to hear such appeals from orders of the subordinate. Judges, which are now appealable to the District Judges. The High Court Judges will do this work in the same way as the Judges of the Westminister Courts do Nisi Prius Court's work in England. In the next place your Excellency's memorialists would have the appointment of an associate Judge in each District Court for the purpose of sitting with the subordinate Judge or the District Judge in hearing all appeals from the decrees of Munsifs. These associate Judges ought to be selected from among pleaders of position, their salary varying from Rs. 500 to Rs. 1,000 per month. They will be a strong element of the appellate Court and at the same time be got at a cheap cost. In cases of difference between two Judges hearing appeals, there may be a provision for reference to the High Court without any necessity on the part of the suitor to appeal.

Now Mr. Hobbouse does not make light of these proposals. He trinks they are well worth consideration, but he goes no further. He asks: "As for the Associate Judges, if you add to a District Judge a man weaker or no stronger than himself, is it certain that you improve the Court? Is it really true that pleaders of such ability and knowledge and practice as to make them efficient assistants to the District Judges are to be got at a cheap cost or are to be got in sufficient numbers at all?" We cannot however see the force of the argument that if you do not add to the court astrenger men then the L strict Judge you do not improve it at all. The functions of the proposed associate Judge would not be to curb the "overzeai" of the Judge, but to advise him, so we do

not see why a stronger man is necessary. But this we can't help believing as an axiomatic truth that when two men go hand in hand there is much less chance of a fall than when one goes al one. Then there is doubt expressed by Mr. Hobbiouse whether really able men could be found among the ranks of pleaders. Well, this point cannot be settled by any discussion, but we shall make one or two remarks. The pleaders receive a thorough legal training and in that respect at least they are superior to the zilla Judges. But we ask with great diffidence, is a high order of talent necessary to perform the functions of the zilla Judge considering the present state of the Moffusil Courts? Uma Charan, a common sheristadar, without any legal training, performed the functions of a Judge for more than 5 years without the fact being detected by the High Court. We believe Mr. Levien got as much praise for his work as his other brother Judges did. And we have therefore a right to expect that the experienced pleaders of our Moffusil courts, with a thorough legal training, would do the work much better than what Umachurn did. The Rajshye memorial was probably drawn by a pleader, we pesume by Babu Kishoree Lal Sarkar the Assistant Secretary, or else we do not e, why the claims of only "pleaders of posidon" are so prominently brought forth. The functions of an Associate Judge can be performed as well by experienced Sub-Judges. Mr. Hobbiouse eloquenty exclaims: "dont' be blind to the difficulties of the problem." As we fully believe that Mr. Hobbiouse means well we have no wish to be blind to the difficulties. But the chief difficulty is not what Mr. Hobbouse thinks -- want of capable men. The chief difficulty lies somewhere else. Let Mr. Hobhouse forget for a moment that this is a conquired country; that here justice need not run counter to the fixed policy of Government and every difficulty will vanish before his eyes.

It is because our Government has a fixed policy, and right, justice and so forth must succumb to it, that our rulers find so many difficulties in their way of governing the country well. The first condition is that the fixed policy of Government must be observed and then you can make any proposal you choose. You propose an excellent measure, just, feasible and excellent in every way but if it runs counter to the fixed policy of Government, it is immediately put aside. May we enquire what more capable men do we require than what we can monufacture amongst ourselves? Even if we can find better suff in a foreign country, do we not destroy our adigenous manufactures by importing them? Can we afford to pay for superior foreign stuff? Would we, if let alone, import such stuff from England and Scotland? Government has determined to impose a grinding tax on a subject country to import "canable" men from England and so Mr. Hothouse ff. 919, problem of improving our moffu-il courts so dithem Are not our Sub-Judges better trained men and more experienced than the district Judges who first Jearn their alphabet of civil law after being raised the bench? Why not give the sub-Judge another lift and make them district Judges Then we shall have in the district courts out highly trained and most experienced officers and the measure at the same time will give universal satisfaction. These men will at least do better than what Uma churn did. The Prove Association also make some important of the same it appears has escaped the neutral and the little and the neutral They say:-

The value of trial by jury by some. But in the humbi, while of your less - cellency's memorialists, the de tribunal, either as under the jarren the other form, is, as a general rule, likely by end man satisfactorily, at any event, to give ments with lacing to the parties, than of Courts composed at all vides Judges; in fact, when two or more their opinion in a case consecutively consecutively ther, there is no guarantee of the final controlin so good as there would be if all of them sa together assisting and consulting with each other in arriving at a conclusion. In difficult points, the tendency to consult is so strong in a Judge that, in the District Lourts occasionally, Judges may be found who are tempted to consult with their sherishtauars. The pre-Bence of a brother Judge is also calculated to check whims and fancies. Thus, in the hunnble opinion of your Excellency's memorialists, the want either of a jury-system or of a composite District Court leaves the parties in a reasonable distisfaction. And it was sent with his full consent. In this letter if it is not proper to suffer this state of things to 1 main in the Mofussil, the partial appeal to the igh Court is not an adequate remedy for it. It comes to this, that to improve the moffusit hourts, it is necessary euher to asmoint highly

trained Judges to the final plum that courts or to

make the courts seou position it signerior men.

as Mr. Hobbiouse manufacts, be mut amakele.

then appoint more than one during in the final

court or introduce the dans system. Now him

ffosil courts have Been of Bridge to Ville transed

be had in sufficient numbers. We trust tu British Indian Association and the Rajshye Association will again press Gavernment for the improvement of the final appellate courts before checking appeals.

THE RUNGPORE LIBEL CASE - The following letter has been sent to us by a correspondent:-

In your issue of the 26th November, I find a leader anent the Libel case brought against Babu Dukhina Mohun Roy Chowdery and Babu Dyal Singh of Rungbore by Babu Gopal Chundra Mookerjee, Executive Engineer of the District. The case is sub judice and therefore I beg you will defer making comments on it till it is finally decided.

One thing I beg to state here, in order to correct your informant's statement, that it was not stated in the petition that, "if the evidence of Dr. Kristodhone Ghose, Babus Janokeebullub Sen, Jogodindro Narain Roy Chowdery, Mohima Runjun Roy Chowdery, and Romoni Mohun Roy Chowdery were taken, the statements set forth in the petition would be clearly proved;" while on the contrary all the above witnesses as well as Mr. Glazier and a few more Zemindars have been cited by the Executive Engineer in this case to prove his innocence.

Every one of the Zeminders have officially written to Babu Gopal Chunder Mookerjee to the effect that the statements made in the petition were entirely

You will do serious injustice to Mr. Glazier, Dr. Ghose and the several respectable and influential Zemindars of this place, who have come forward to give their evidence in the case, if you consider that this case has any concern whatever with the Levein

P. S. I enclose my card.

We have omitted from the letter a couple of sentences containing benedictions on the head of the Editor, more for the sake of the writer who holds a high rank in the service than for anything that we may care. It is merely untrue that we called Gopal Babu a devil or that we in way tried to prejudge the case against him. We poor natives of the soil are not trusted with any responsible post under Government, and whenever any native like Gopal Babu by his ability secures such posts, he paves the path for others to follow him, and therefore deserves well of his countrymen. It is when such o our countrymen take the aid of the Executive to crush a private individual that they lose our sympathy. If this case had not been a offshot, of the Levien case perhaps we might have not noticed it at all, but since as we believe, it is only a sequelle of the Review affair it has turally excites the interest of the problem Our correspondent however den salation med ne anything to do with the Living the Living the Assistant Engineer Preonach see however as we proceed a first the training the see before Gopal Babuarriver in the setters? some of the z mendage wrote to to make Lieun also said that Dukhina Mobun had not taken Gopal Babu write to the Lemindars during certificates? And is to the a last the at least one of these letters from Gopal Baba was berried ! to a certain Zemindar Rot by a peou but a high

police officer himself ? If we disclose such facts it is only because the officious friend of the Babu has compeded us to do it. The Babu in his deposition thus sets forth his ground of complaint: He Meposed.

Dakhing Mohan and Dyal Sing with the aid and abettment of Lal Sing intending to harm my profesmonnt reputation, as a Government Engineer malicignsly on the 23rd May 1873 sent a petition to His Honor the Lieutenant Governor of Bengal against me, accusing me of being an oppressor and doing ust what I pleased in respect of land. My witnesses are Mr. Glazier, Dr. Ghose, Babu Jogodindra Narayn Roy Chowdhry and &c. In the petition there were also allegations against Babu Preo Nath Banerjea

my Assistant Engineer. Gopal Babu was then asked by defendant why old it take one year and five months for him to institute the case. He said in reply that he was collecting proofs to identify those who sent the petition. How flimsy this excuse is will appear from the following facts. The petition against Gopal Babu was sent on the 23 d of May 1873. It was immediately sent to the Magistrate for inquiry so that Gopal Babu as he alleges summitted his explanation on the 14th of the following month. But soon after the petition was sent to the Magistrate for inquiry, Babu Doyal Sing wrote to the Magistrate in his own hand writing that the petition was written out by his son Lal Sung and that addressed to the Magistrate and written by Doyal Sing himself, he fully took upon himself the responsibility of sending the petition; and this letter has been lying in the hands of Gopal Babu these 16 mouths. What more direct proof did he require to bring home the charge of writing the petition to Doyal Eabu? If more was needed Babu Kristoanone Ghose, we beg the Shaheo's pardon, we mean Dr. Ghose knew all about it and Babu Gopal himself admits in his cross examination

That he "heard from Dr. Ghose, about June or

Duknina with the knowledge of Doyal Sing." Indeed Babu Doyal Sing never made a secret of the matter. So Gopal Bahn could have easily proved the charge against Doyal Babu if he had instituted the case 16 or 15 months before. That he did not, he waited 17 months! Then the case against Mr. L. vien was instituted, and as soon as that case was over, lo! comes Gopal Babu with his charge of defamation against the principal witnesses in the Levien case. And who are his witnesses? Mr. Glazier is his principal witness and the other important witness is Babu Jogoddeendra Narain. Now it is well known what im ortant part these two gentlemen played in the Levien drama. Mr. Glazier was all but a Muktiar in that case and Babu Jogodeendra was the only native who gave his deposition in favor of the Judge. Doyal Sing brought serious charges against Mr. Levien and it so irrated Mr. Glazier that he in his deposition vented his wrath up n that gentleman. Taken all these facts together the public have come to one conclusion that the case was brought by Gopal Babu at the instigation of Mr. Glazier. to give Doyal Sing a terrible lesson what it was to run counter to the wishes of the executive.

The principal charges set forth in the petition against Gopal Babu were (1). illegal detention of Babu Dekhin Mohun's bricks and (2) cutting crop bearing lands while uncultivated lands w re available. The deposition of Mr. Gl zier himself, the District Magis: rate, the principal witness of Gopal Babu, will shew whether or not the petitioners were justified in submitting the petition to Government. Mr. Glazier says:

I know Dukhina Mohun Ray and Dyal Sing. I knew Lall Sing as a boy in the English School. I remember having seen the original petition sent up to Government against the Executive Engineer. which petition was the signature of Dukhina Mohun. Ray. This is the petition dated the 23rd May 1873. The signature on the petition is that of Dukhina Mohun Roy, I know his signature. This is the draft of the letter I wrote to Dyal Singh (marked S by the Court.) This is the reply I got (marked K) I was called upon a report regarding the charges aginst the Executive Engineer; and the report made by me is this one which I read filed and marked. I set an extract from my diary of the 20th February 1873 to the Executive Engineer: This is the extract marked W.) It is the custom to repair roads by cutting the lands on both sides. Villagers generally on the road when cultivating. Dyal Singh was coul superintendent some years ago. He resigned in 189, 19 4 Sing once came to me to complain of their the bricks that had been bought by

La trana Medica. Gopaul Babu told me as far as I

at the state the spute about the bricks originated

exonerating him from the marger and against have bricks within the stipulated time and had him in the perimone Burne it not a feet that a termards gone for the bricks after the ground was the water. I do not remember that Gopaul b. ... Formed me of any particular steps that he Luimself. dren in the matter, A believe there was so of Timinal case between Broomath and Dukhina Babu regarding their bricks. Dyal Sing spoke to me about instituting a case regarding the bricks. I have some idea there was such a case instituted. But do not remember distinctly whether any such case was instituted. I am aware of the overseer Nundo Lall having in repairing roads cut crops on one side of the road when there was uncultivated lands on the other side avaliable for cutting: One of my chaprasees male a complaint of this kind and I personally looked into the matter and ascertained it was a fact. Dyal Singh at a meeting of the Town committe brought some such cases to notice and mentioned that some of Dukhina Babu's ryots had their fields cut up. The facts were recorded on the minutes of the committee, I believe of the Town committe, but it may have been F e y Fu d committe. I did remark and complain that unsymmetrical cuttings were made in the compounds along the side of the road instead of the cuttings being regular. No mention was made on my report of my chaprasi's complaint. I did not write to Dukhina Mohun a similar letter to the one I wrote to Dyal Sing. Lall Sing's style is florid as I noticed when he was a boy in school. I know nothing of his style since he had been to College. I do not know his hand writing. I believe that Gopal Babu paid his attention to his complaints about cutting crops when brought to notice. I wrote to Doyal Singh because I stated in my letter he was expecting to be employed in the public service. I had no right to call on Dukhina Babu as he was a private individual. The plaintiff may have mentioned to me that Government bricks were being moulded and consequently Dukhina could not move his bricks. Naunda Lal was employed under the plaintiff and the plaintiff was responsible for supervising his actions.

We regret we have no space for extract from the diposition of Babu, we mean, Dr. Ghose and others. If the friend of Gopal Babu can comvince us and the public that the present case has no connection whatever with the Levien affair and can satisfactorily explain why Gopal Babu rso long waited to institue his case we shall cease I to take any interest in it as one between two

rivate individuals in Thich the public has no

विख्वां शन।

कशनांत्र (हेखांत्र।

अउमात मर्स माथात्र एक जां कता याई-(७८६ (४, (জ.ना य:नाहरतत जन्म जि.न म निथिड ण्डान मग्रह याहाता उरक्छ श्राकादतत निम्ननि-क्षिष्ठ शर्विश्व विन क्ष्य (rubble coal) श्वांशं हें दें পারিবেন ভাহারা নিম লিখিত স্থাক্রকারীর নিকট रिछे अवर्शि कि मूला डेक काल मिर्ड भारि-বেন ভাহার দরখাস্ত প্রেরণ করিবেন। ইট প্রস্তুত कतिवां विभिन्न विवा विवा किर्मान

> खान नवशक्षात जीत्रष्ट् यां खता मन 2000 ডিবিজন रेड्डव नित्र ७ इड यटमाइड 30000 नगत

छिखांत धोर्ग इहेल बाहात शत धक गाँदनत गर्या कराना उपराज स्थान मगूर व्यागनानि क-तिएं इदेव।

পর গৃহীত হইবে না।

(ज, পৌढाजमन (J. Paterson) धक् मि किडोिड देखिनियात,

यदम्बाइत । (२)

गांशाकानन।

याइत्कन यथु समन मछ छानी छ। गूला १।० डाक गांशम ०/० वाना। কলিকাতা শোভা বাজার অপর চিংপুর রোড स्थि ३४०। ४४ नः एन, नि, भान এए कि भागित्र इंडेन्ट्रियांत्रमान ध्विष्ठिकांन इन न यक छेन्यांनद्य उ व्यथानात मञ्चा पुरक्ताना मम्दर् था।

भावर-महन्रिं जिनी ना छेक।

সূত্র ভারত বন্ত্রে, সংস্কৃত যন্ত্রের পুস্তকালয়ে, शहिलाजाजा कानिश लाहे खितिए नियू थानमायात शिल (शहलडाका) ३१ मश्थाक ভरान धवर রাধা বাজার 300 नर हल भारन यदब्र मार्कातन थाख्या। मूला धक छोका इहे जाना।

मर्वाम ।

— मां जि लिश निष्म र तलन जा ज (त्र्यान मात्र नामक धक জন চা-কর সাহেৰ এক बाজিকে প্রহার করেন। সে माजिए हे लिज मार्ट्य विक जिल्हे जिल्हे विकास क्लिन मत माद्रव अरे वाङ्कित विकास मात्रिकित मावि मिशा পেজ माट्ड्रिश निक्छे आंत अक मक्ष्मा वादनन। (शंख माइन क्लान मद्वत मक्न मा जिम्मा कतियो जारांत विशद्क य नानिमं र्य जारांज जा-হাকে জরিমানা করিয়াছেন এবং এই ত্রুম দেওয়ার সময় তাহাকে মিখ্যা মকদ মা আদিয়াছেন বলিয়া ভারি তিরক্ষার করেন। কেপান্সর সাহেত্বের নামে এইবার मिया प्रदे वांत भाविभाष्टित जिल्लिशां दहेल। शिक সাহেব যত দিন তাহাকে জরিমানা করিবেন তত দিন ত। होत्र अहे द्राशं योहेटन ना। जिनि हेहांटक मिरांत्रम, मार्ट्यत नाग्य अक वात जीघरत ट्यातन ककन। जाहात टेठ जगा इइ ह्व ।

— এই ज्ञा दो दे त्य, कटर्न क्यां व्यक्त कि विय शांच করাইবার চেন্টা পার তাহার অনুসন্ধান করিবার নিমিত্ত (वाचाई इहेट जिल्लामां किममान व जिल्लेक हिन जिल्ले लिम रवलाय छेशिन्ड इहेग्राइन।

— इरे जन एउनि अक जन रहकहारक वाकियन करता সাবি নামক এক জন সাহেব হরকরাকে সাহায়া করি-(क होन। (कोट्डेब) मार्टश्वरक ७ इतक्तारक छेखम । क्षा व्या वर्ष वर्ष वर्ष वर्ष वर्ष वर्ष

इहेश तोक विठात नीं इश। তाहा मत था जारकत চারি মাস ফাটক হইয়াছে।

—(वर्वितिशांत ताजा भी य ভात्रवर्ध जागमन क-विद्यम। इनि धक जन मञ्जी ज विमात्म। शृथिवी (ज धर्मन यं मं जा जि वार्ष्ट् जो होता मकत्ल है थाय वार्या वश्रामामु । जार्या वश्मीय्राम (मम काम ज्यान प्रमाद्र नाना छ। तन नाना जाश श्राक्त शिश्व इन। इडीगा कि तनी-ভাগা ক্রমে এ দেশীয়ের। ভারতবর্ষে আদিয়া অবস্থিতি করেন। এখানে তাহার। আদিয়া পারমার্থিক উন্নতির দি क वकाला हिए नियुक्त इन। यात्रा, यात्रा माधन, कहना, धान প্রভৃতি মনুষোর যত দ্র আয়র্ভাধীন হইতে পারে তাহার সমুদয় ইহারা অধিকার করেন। সঙ্গীত উপা-मनात जक्ती अधान मार्थान। इंश्ता मङ्गी जिल्ला-ষতঃ कर्श मञ्ज তে উन्नजित প্রাকাষ্ঠা লাভ করেন। विहे मक्षी (जत लोशोशिं इहेगोत छेश क्य इश्र । तो जा यडीत्म ७ (मोतीत्म स्योश्न ठातू तिपात्र उत्नागि अ डेलमार्ड जावात इंडा मङीत इंट्रिक्। इंडेर्त्राथी-(য়য়। এখনও হিন্দু मङ्गी তের মাধুরা রুঝাত পারেন नारे। मझ ज मयदक जारा दित वृद्धि कि इ म न। जा-হারা এ দেশীয় সঙ্গীতের সূক্ষতা অনুভব করিতে পারেন না। বাবেরিয়ার রাজা এক জন ইউরোপের व्यामकं मजी जित्वा। जामादनत व्यार्थना (य, द्रांका यडीन (पाइन धकवात जारा क अ (मनीय मजी ज तूया-ইয়া দেওয়ার যত্ন করেন। ইউরোপীয়েরা এখন প্রধান জাতি। তাহারা হিন্দু দিয়ের পূক কিরির প্রশংসা क्रिट्ल जामबा जामाि पिशदक क्रजार्थ मःन क्रिव।

— এक छी गृजन करत्र প্राथात इहेट एहा। हे॰ ब्रांकिया वल्लन य यज दक्य छ।क्म अ (मर्ग निक्रांत्रण इडेक ना, এ দেণীয়ের। মিখ্যা কথা ও প্রাঞ্জনার জেরে গাবর্ণ-(मण्टिक क्रांकि मिट्वन। धरे निमिन्छ (कान विष्ठ देशतांष्ठ छन्त जर्था ए जुड़ी त छे शत है।। कम वमा हेवा त था छा व क-রিয়াছেন। তিনি প্রস্থাব করিয়াছেন যে যাহার তুড়ী মাপিয়া কুড়ি ইঞ্জের কম হইবে তাহার প্রতি কোন छे। क्रिंग कर्ग इहेरव ना। यादात क्रों इहेरड शांहन कें कुँ छीत त्व इहेरव छ। इंक्लिव विभन्न व छोको छोक म विराद्य अक छ।को किमार्थ मिर्ड इहेर्व अवश अ॰ मित ७३ টাকা এবং যাহার বেড ৪০ । তিনি অনুন নিয়া সম্ভবতঃ ভয় পাইবেন। मिट्शं र डेशं इरे विमिट्य। ' अक मिन काल विकास ध तथ ऋ एथत मिन ছिल स जू छी जिल मार्य जिल ना किछ इंश्रांक यहा शूक्रका जाहा गलाईया निया क्रिया श्यम आंत्र ध मिनीय्य मिर्गत कुषी मारे, आमारम उँ छो छोर्श्वा जश्द्रवं क्रियाः इन। ध (मभीय्रान উদর পুর্তি করিতে হয় তাহাদের ভুড়ী কোথা হই-তে আদিবে?

— जामारमत छिरिन्म मार्ट्य यिनि नत इंडा। ज-পরাধে রাজ বিচারে নীত হন, তাহার সাহা-यार्थ इंश्त्रां ज्वा १००४ छोका छाना मर्धां कत्रिया-

— धट्यात लेका खिक खाव या शाट था टक, खादा इ जीवन कथन ४ ९ में इस ना। दिश्यान क्राथिनिक धर्मित यङ दिनाय थाकुक, ऐक धर्मावल मी दिन वारे (बल जिल्ला) ভক্তি। এই ভক্তির নিমিত্ত ইহার এখন সমান প্রভাব त्रियाटक। मश्याजि जामादमत कृजश्य (भाषे मार्येत एकना बन प्रेडिंग मार्ट्य अ वाशिक्षांत्र ऐक क मार्ट्य द्वा- अवस्त । मान काशिनक धर्मावलयन कर शिष्ट्नम जोराव ट्याटिटिसेन्टे ছिल्लम। इंश्रा इंश्लि इर्गिन कार्थानक इहेश आनियाद्वा

— श्रु वाङि य नाना जादाब शोर्याक्षा भाषान शित्र अहे करमकी मचाम ध्यकान कित्रिग्राट्ना मिनाहा

युष्क्रत शूर्विक कर्नल मर्ब छेममन नानः रक जारमक बांद (मर्थन এবং তাহার স্মরণ আছে যে তখন নানার দক্ষি इटक धकिन मार्श ছिल। धइ गांकि श्रु इहेटल जाहां श्र এই कथा यात्र । जिनि প্रकाश करतन स्य य नि थ वाकि श्रक्त नान। इय उत्व धरे मार्गनी थाकात मञ्जादना। श्रु वा कित्र मिक्न तरक श्राप्त এই त्रार्थ थक मिन वार्छ। এই क्रथ दा दे य नानात सी की विज वाषात निर्भातन जार्ड्न এवर जिनि मधवा खोद्र न गांत्र जार्ठात वावशात करतन। এত छिन्न এक छन्न नानात ममन्यकीय त्रक श्रु वाक्तिक नाना विलिट्डि।

— এই राभ दा छ । या या पात त्व व्यक्त हिन्छ श्वा জাनूशांति याटम চটোতাাম পরিদর্শনার্থে গ্রমন করিবেন। — (वांश इश मकल्लं आवं आवं आहि (य धक जन आशांव) नारम এই অভিযোগ হয় ষে দে একটা সাহেবের বা ।-करक िय খাওয়। ইয়। হতা। করিয়। ছে। দেদল জজ তা-হার প্রতি ফাসির ত্কুম দেন। আয়া এই ত্কুমের বিক-क्ष रारेकां है जाशील करता जवर राहेकाहें रहें मि (वक्ष्यत थालाम इहेशार्छ। आयार्पत अहे मस्राप्ती श्वित्रा भारीत त्रमां अञ इहेगा एकिन। मनूरी जम भून, े जोशंत जम इख्या जान्ह र्गत विषय न इ. किल वरे क्रश जम शूर्व इहेशा याहात। मनूषा जीवन लहेशा (थ ला করেন তাহাবা কি ভয়ানক লোক।

- गंड वरमत जामिशा माइन्द्र (यक्तर्भ इंडिक डेशश्वि इय़ शृथिवीत वाि जन्म श्रांत्न कथन এक्षम जन्न करो इहेशाएए। जनाहाद्य-लाग ১०० हाजात लात्कत मृज् इय। দেশে क्याएं त क्यि कार्या डेलेएया भी भवां मि जन्ह, শদ্যের বীজ ইত্যাদি এরপ হুল ভ হইয়াছে যে, অনে কে वां भंश्कां क्रिटि . इन वां गांगी विश्वति । त्रिशां क्रिं क इइत्वी

— मित्र प्र जिकाती देश्त्रो जिमित्रात नाम (लाकात। मा-व्यां एक इंशापित । धक छन लोको दित ते ख छत्रो छीर्व इंशो यां म । (म এই ছিদ্র বস্ত্র শেলাই, করিবার নিমিত্ত একটী मृह. ७ সৃত। চুরি করে। এই অপরাধে ইহার কঠিন পরিশ্রমের সঙ্গে ছ্রমানের মিয়াদ হইয়াছে। এই স-मामिती श्वित्रा जात्नक शिमूत कमल समग्र राथिक इहेरकः

निटि इंडेर्ग। २० इंडेटि २० इंक्ष शर्यास खिन्हि दिस्य — मालग्रागिमी धक्नी युवक जार्शन निरस्त जार्सा. শক্তি দেখাইতেছে॥ কোন ধাতু মুদ্রা, প্রসা হউক वात होका इडेक, भि मख दात्रा ध्वा महत्व दिश्व रहेरत वार्था ए य वा किन के के राज र र है इहेर करत (य मिथितन विश्व का स्व मि विमिक्ति कि क्षेत्रभ তিনি বৎসর ২॥০ টাকা দিবেন আহাৰ তেইঞ্চ বেড় সহজ্ঞ ভঙ্গুর কোন বস্তু দন্তের দারা চকাণ করিতেতে। তিনি বৎসর পাত টাকা, যাবার ত বা বেড় তিনি যাহাদের দম্ভ প্রমল কি নড়ে তাহারা এই সম্বাদ্টী শু-

১৯৮৪ টাকা কর দিবেন। এট্যাক্ সলি এ দেশীয়- শত সাত বৎসরে অযোধ্যায় সহজ্ঞ বালক বা-लिको वाभाष प्रांता नस्छे इहेशाट्छ। हे शांक नामन जविध मञ्चव डिश्व जल्त डेश्शोष्ट्र इक्ति इहेग्राह्म, का-त्व यथन इंश्त्रा जित्र विष्णित अदिवन ना कित्र मिहिलन, ज्यम जार्याभागवामीतित माश्म हिल, बीर्ग हिल, जास न्य जिले देश्यां जाशीन इछ्या जाविश जादादा व मय-অন্ন ক্লাট হইয়া পড়িয়াছে। যাহাদের কটে স্থেট দ্যা গিয়াছে। তাহারা বা যু কেন একটা খেপা কুক্কর 💝 - इडेट जो शिंगा निगदक त्रका कतात माधा जारा निव्

> जा निक्षेत इरेगात छे नक्य इरेगाट्ड। थाजारा काटक शांजना (मण्या वन्म क्रियां इच । वक-তহাশালদার রাজস্ব সংগ্রহ করিতে গিয়াছিল। প্রজারা তাহাতক ওকতর রূপে প্রহার করিয়াছে। খি-वात्र थ। जलल भागात्त्र अफिय़ार्ड्न। जिनि किन्य-निर्भात माहाया आहल निमिन ऐत्मान करित्र इन। ए यिन असे मामाणी में इस उत्व किमिस्ती वादिश वार्थ-मत इहेल्ला विवास मखवं कः क्रियं गर्व हिल्ल अहे रिशाल रियाश जारिक इक्शांटिक । जार्निटक धके तथ कि-शाम जामब्राद्य हको गटलब निकं देश बाद ज्वां व

छिठां हे स्थान विश्व के बार्ड कर मार्ग कर बन, दब सहा कर बन स्वास्त्रका स्वास्त्रका स्वास्त्रका स्वास्त्रका स्व भटनमः योक्ताः येकीन यटम्ब क्रिक्रेस का का का का विश्व

INDINA PUBLIC OPINION.

THE KING COTTON

(From the Bharatshangskarak)

The miserable condition in which the Indian weavers have been reduced by the Manchester merchants pains even a most obdurate heart. To remove this misery the Bombayits, sometimes ago, established certain machines and mänufactured clothes to a large extent. The merchants of Manchester have to pay 80 or 81 lacs of Rs. a year for importing their piece-goods, while the Bombayists can sell the'r manufactures without paying any kind of duty whatever. This caused apprehension to the English merchants. Subsequently a representative of the Manchester people became a member of the India Council. What we apprehended by the occurrence of these two circumstances has actually come to pass. We clearly see that the triumph of Manchester is certain. The principle of free trade is on their side. Several members of Parliament are on their side; Lord Salisbury on their side; and that high consideration, the interest or England is on their side. Now their end will be gained, if the Government of India also side with them. But we earnestly solicit the Government, it will take the condition of India in its consideration before it passes any opinion in the matter.

THE SAME.

(From the Indian Daily News)

THE extent of the influence of Manchester on English politics, and the danger to India which may occasionally rise from a blind exercise of that influence, have not often been so plainly exposed to the world, as in the report of the deputation of Manchester merchants who waited on the Secretary of State on the 4th November last. In all the talk which took place at the deputation, we look in vain for that anxious and intelligent concern for the real interests of India, which however foreign it may be to the bosom of Manchester merchants, we have some sort of right to expect in the official utterances of the autocrat of India. Instead of any feeling of this kind, we have peeping out everywhere a selfish devotion to their own gains on the part of the Manchester men, and on the part of the Marquis Sansbury a flimsily veiled anxiety to avoid giving offence to a powerful political party. From a study of this conference, the question inevitably arises: Will India always be sacrinced to English political parties? The question before the deputation was, whether it was right to retain the small Indian import duties on cotton yarns and other goods; and no one can feel much surprised to learn that the retention of these duties is considered highly impolitic by the the disinterested mind of Manchester. See how nicely the impolicy of these duties is expo ed. The revenue from this source, it is said, is steadily failing, and will, therefore, in all probability, some day collapse altogether. Accordingly, no great object can be secured by retaining it, especially if in the interval between the present and the moment of its collapse, some serious evil should be bequeathed by it to the country. Of course Manchester has not to look far or long, to discover or imagine some evil of this kind; and one is accordingly forthcoming in the shape of a prescriptive right to protection on the part of vested interests. We admit freely that, if manufactures were to spring up in India, and could not be produced at a lower cost than the present cost of imported fabrics, such manufactures would acquire a prescriptive right to protection. In that case, we should be disposed to justify the protection, on the simple but satisfactory ground that what are glibly styled free-trade principles are obviously inapplicable, in their fulness, to a country in which free trade has never been honestly permitted to develop. It is absurd to talk of free-trade principles in the abstract, when all the indigenous industries of India have been so unduly weighted in political handicaps, that some of them have actually perished, while others are lingering on in an attenuated existence. But there is no reasonable ground for supposing that Indian fabrics will not eventually be produced in this country, at a lower cost than the present and probable future cost of importing simbar fabrics from England; and if the revenue derived from such imports must eventually decrease because the imports will be undersold by home produce, the present abolition of the import duties would mean a good deal more than the mere loss of revenue which we must be prepared some day to meet. It would mean, just at present, such a further haudicapping of Indian industries as would kill them outright, and prevent them from eventually competing with Manchester. To Manchester men this might possibly, and will doubtless, seem a consummation most devoutly to be wished; but in India, where indilgenous industries are being crushed out by an ungenerous neglect, and where all classes of the people are being gradually turown upon the land, and the food resources of the country threaten to fall short of the demands of a people who are artificially, if rightly, preserved from battle, murder, and sudden deaths, such consummation entirely fails to reccommend itself to the intelligent mind.

It is superfluous to say that we sympathise very slightly with the hystericial portion of the political and economic beliefs of men as the author of some laborious papers on the commercial exploitation of the Indian populations, which appeared a couple of years ago in the Calcutta Review; but it will be allowed even by those who are at one with us in this Seeling, that the papers to which we refer very plainly showed that the coasting trade of India was gradually perishing, that its hand-looms were passing away, and that once flourishing communities were being steadily reduced to abject poverty. At present we have only, or chiefly, to deal with those industries which have been ruined in consequence of the culpable, and indeed criminal, neglect of the Indian Government, here and at home, to fairly protect the indigenous manufactures of India. This neglect, as we needly hardly point out, has been intentional, being, in fact the sacrifice offered by short-sighted statesmen, for the sake of present peace, to the influential money-grubbers of England. Lord Salisbury, in his reply to the deputation, points out clearly enough that the revenue from imports shows no present sign of decreasing, and is not therefore, financially so unimportant as the Mauchester men desire to have it considered. He also hints that fabrics will probably some day be more cheaply produced in this country; and he shows that as the aggregate revenue from imports, which is still increasing, falls short of the average fluctuation in the opium revenue it would be impossible to give up the im-Fort duty with out providing some other stop-gap for the deficit which would then be inevitable. Finally, he shows how impolitie it would be to introduce, at the cost of serious discontent, taxes which have alroady been discredited in India; and how difficult, if not impossible, it is to invent others. But it will strike many thoughtful persons in India that Lord Salisbury was merely playing with his audience-afraid to tell them the whole truth. If it be true that grave anxiety is felt about the food-supply of the people of India, and that it has become necessary to arrest the further progress of that gradial transfer to the land of persons who formerely lived by hardicraft-which has been going on for some years,

until it has grown into an administrative scandal-then,

it seems to us, it was his Dordship's plain duty to put

clearly before the deputation the obligation now incumbent

on the India Government to decreate Indian indus-

one day under-sell Manchester-though this is clearly not what the Marquis of Salisbury thinks-but even if it be so, the present duty of the Indian Government is to protect all indigenous industries that are capable of keeping the people off the land--and to do so at any cost to the merchants of Manchester. And if this must be done at all, it will probably have to be done by leaving such a narrow margin of profit to Manchester importers, as will dissuade them from striving to vie with the industries which may spring up here. Eventually, as Mr. Elliot and others have often shown, Indian industries will need no protection. But, in the meantime, the least adverse influence may destroy them; and it is of importance that the political influence of Manchester should not be permitted to interfere with England's fulfilment of an important obligation to the people of India.

THE SAME.

(From the Indu Prakash)

Here is the final decision on the question of protective duties in India given by the highest official directly connected with her Government. Lord Salisbury decisively states that the British Government could not impose any protective duties because they could not be maintained in theory and it had, itself induced other Governments to remove them. By the latter he means the European Governments. This is a good illustration of the evil of applying principles adapted to countries advanced in material wealth to countries much backward in that respect, The Marquis however thinks that the import duties did not operate as protective duties and that the revenue of this country did not permit their repeal. This opinion however, any one can see, is founded on such slippery ground that we shall not be surprised to hear ere long said that the düties did afford protection and the revenue could spare their amount. Thus we see how in some respects, a highly civilised country becomes baneful to the little advanced one under its power.

THE CRIMINAL PROCEDURE CODE.

(From the Hindoo Patriot.)

A REFERENCE was lately made to the High Court by the Sessions Judge of Tipperah, which shews how the clauses for summary trials under the new Criminal Procedure Code are calculated to frustrate the ends of justice. The reference was made in connection with the proceedings of the Magistrate of Tipperan in a case of their tried by him under Section 381. The case was tried by him summarily under the provisions of Section 222 of the new Code of Criminal Procedure, which lays down that a case of theft can be summarily tried, if the amount stolen does not exceed Rs. 50. The accused was a khansamah of a Mr. J. P. Leicester, and the charge again t him was that he had stolen a box containing Rs. 50. in cash, and the box worth 8 annas 6 pie. The value of the property, therefore, which the prosecutor said he had stolen was worth Rs. 50-8-6. The Magistrate, however, struck out the 8 annas 6 pie, and by so doing empowered himself to try the case summerily; and after convicting the accused sentencea him to three months' rigorous imprisonment. The prisoner appealed to the Sessions Judge on the ground that he had been illegally tried and convicted, and also on the ground that there was no evidence against him upon which to ground a conviction. The Sessions Judge therefore sent for the proceedings under the provisions of Section 295, and also requested the Magisrate to remark on the allegation made in regard to the value of the propert. He replied that he considered the box of no value because it was thrown away by the thief who had no object in stealing the box. The Sessions Judge remarks, "this argument is not sound. The box formed a portion of the property stolen, and was valued by the prosecutor, and which brought the value up to a sum exceeding Rs. 50, and therefore took the case out of the provisions relating to summary trials. The sum may be, as in this instance, small, but this cannot affect the question in the least, and I do not think that the Magislrate had the power to try the case summarily." It was also urged before the Sessions Court that there was no evidence upon which a conviction could be properly had and that the Magistrate erred in saying that the "cash-box was last seen in his (prisoner's) charge, and he was the only person likely to have been able to take it out of the almirah," in asmnch as the cash-box was never put in his charge at all, he having only general charge of the house at the time of the supposed theft, and that the finding of the box in in the river was not nearer the prisoner's house than that of many others. The Sessions Judge observes: "As the trial was a summary one, nothing can be obtained from the records; but under the circumstances, I think the summary proceedings should be quashed and another trial directed, not only on account of what has been remarked above, but on the inadequacy of the sentence passed by the Magistrate. If the offence of which the appellant has been charged as proved, three months imprisonment is one very inadequade; but from the Magistrate's judgment it would appear that the evidence against him is by no means conclusive." The reference was heard by a Division Bench of the High Court consisting of Justices Markby and Mitter. They remark as follows:

"Upon the whole, it seems to us that the view taken by the Magistrate was that he was at liberty, upon his own authority and without taking evidence, to throw the box entirely out of consideration. Now that course would clearly be illegal, for, as I have said before, prima focie the bex and pencil were of some value, and although the Magistrate would have a right to inquire into the facts in order to see whether he had jurisdiction, those facts would have to be inquired into by taking evidence precisely in the same way as ne would take evidence upon the merits of the case. Under these circumstances, we are compelled to come to the conclusion that the Magistrate had no jurisdiction in this case, and that therefore the conviction ought to be quashed.

We may add that in this case we should probably have directed some further inquiry to be made, but it appears that the prisoner has already been in jail since the 22nd June last, upon a sentence of three months' imprisonment; and therefore if any further inquiry be now made, the time for which he has been sentenced will expire before the case be finally disposed of"

finally disposed of." This case shews what a dangerous power is placed in the hands of the Mofusil Magistrate. If he is disposed to ride rough-shod over the liberty of the subject, there is no power on earth, which can prevent his so doing. There is no record in appeal. Fortunately in this case the value of the things stolen was more than Rs. 60, and the Sessions Judge happened to be one, who was jealous of the liberty of the subject, and he took the case in right earnest, and got the sentence, which he says was passed upon inconclusive evidence, quashed, but this was not done until about two months out of three to which the prisoner had been sentenced had elapsed. But if the value of the things alleged to have been stolen by the prisoner had not exceeded Rs. 50, there would have. been no remedy for him. We do not know how many cases are occurring in the Mofussil in which innocent persons are being thus sent to the jail by over-zealous Magistrates under the summary clauses of the new Criminal Procedure Code. In a matter of this kind one case is as good as a dozen or a hundred; it shews how the correr is likely to be abased, of course the notives have

agitate as the latter have done in the Meares, case; but will not the wrong be therefore righted? We pause for a reply.

MR. GRANT DUFF.

(From the Monitor.) THE sojourn of Mr. Grant Duff in this country is an incident of no small importance. We always felicitate ourselves when an Englishman—a member of Parliament—professes to make India his special study. The ignorance of the English people in regard to the affairs of this country is proverbial. This ignorance is the source of many evils to which the country is exposed, and any thing therefore that is expected to dispel that ignorance is indeed a cause of congratulation to us. An ordinary Englishman writing a book or a pamphlet on any Indian subject making a speech at some institute or other or contributing an article to some newspaper or periodical is deemed by the natives of India to be a benefactor. It inspires them with much confidence when an influential member of the English society be he a member of Parliament or not does any of the above things. But when a member of Parliament of Mr. Grant Duff's position and influence condescends to visit this country with the avowed object of seeing it with his own eyes we really feel delighted in the belief that his interest is not passing. This belief is very assuring more especially when Mr. Grant Duff contributes to it. He is a man of vast erudition. His influence in the political worlds is also very great certainly not so great yet as that of Disraeli or of Gladstone, but undoubtedly already much greater than that of the majority of the commons. He is accustomed to deal in Indian subjects, but unfortunately he is not quite at home with them. He himself feels his deficiency and maintains his position in any contest or even sometimes obtains victory by skilful manœuveres and because those who are opposed to him are not better furnished than himself. It is a pity that it should be so. We do not wish to be harsh upon Mr. Grant Duff, it would be a breach of hospitality on our part if we were so. When he is now in our midst and confesses his difficiency we ought to forget the past, give him a hearty welcome and help him to acquire that knowledge which he saeks. Mr. Grant Duff wishes to test by means of personal observations on the spot his impressions of Indian affairs derived during his official life at the Indian office. This desire is certainly commendable, but whether on the spot or at a distance, Mr. Grant Duff would not be a bit wiser if he were to take a view of things from the India House point of view. He must not carry his first impression along with him. He must view things independent of those impressions and absolutely divest himself of them. The field before him is an extensive one but his time is short. It is said that he will be required in England in march next; so that we fear it would not be possible for him to go through the entire in all its ramifications. We doubt whether he would have sufficient time to obtain as much information in any one department as would stand him and the country in stead. We hope Mr. Grant Duff would not turn out to be another Victor Jacquemont who after a few minutes' conversation with a revenue officer in this country fancied himself to be thoroughly conversant with all its revenue affairs.

PLANTERS.

(From the Hindu Hitoiskini.)

Perhaps the heart-rending groans of 200 millions have reached the Throne on High, perhaps the cup of our misery is full and prosperity dawns on us, perhaps some good angels unable to bear the sad spectacle, have come down to move the hearts of our rulers! Or else how can we account for this sudden change, though small still cheering in the administration of justice? We hitherto entertained the idea that the Anglo Indians are gods and placed above human justice. They have frequently been guilty of murder, cruelty and all the horrible crimes, which result from a blood-thirsty and irreligious disposition but they have been rarely held accountable. The police is afraid of Englishmen. The native judges are in dread of the Government, while the English judges are friendly disposed towards the culprits. The jury is generally composed of low Englishmen. The rich and dreaded Anglo-Indians can easily procure false witnesses. Placed among such favorable circumstances, is it strange that they were rarely proved guilty and impunity led them more and more to crimes? A ray of hope dawns on us however. One Meares of Jessore, an Anglo-Indian, horsewhipped a poor innocent Dak peon. Mr. Smith, the Magistrate of Jessore, investigated the matter and found Meares guilty, He was sentenced to three months rigorous imprisonment. This is an extraordinary event in the annals of British Indian Administration. The punishment of an Englishman is a miracle. A similar miracle occurred lately at Cachar. Mr. Peares, the manager of the Dooarbund Plantation in (a har, wounded his cook, a native, with the sharp end of a knife. He was found guilty and punished with three months imprisonment and a fine of Rs. 200. One or two such cases must not lead us to think that our government has repented and intends to be impartial in future. There are some English officials whose sense of justice is not tainted and it is they who like the select. few now and then take pity on us. Our government is fully aware that partiality is shown towards the Anglo-Indians, but it never takes measures to correct the abuses. We give only two instances of injustice but many outrageous acts daily take peace al ost in every district. One of the Magistrates of Calcutta, on a very light charge, fined a carriage-driver Rs. 50. Of course the driver was a native. A poor oilman of Calcutta brought a charge against Major Waters for assault. The case was fully proved but the Magistrate dismissed it on the the plea that the charge was too simple to be taken notice of; he at the same time advised the Major to bring against the oilmon a charge for damages. These Saheb brought his oase and the poornative was fined Rs. 20.

THE INDIAN CIVIL SERVICE.

(From the Indu Prokash.)

This is a subject which is now attracting the attention of the English and Anglo-Indian journals." The failure of the competition system is insisted upon everywhere, the causes of it are being sought and various suggestions made to remedy it. The controversy ws introduced originally, if we are not mistaken, by the Edinburgh Review and has since been hotly carried on by the other journals. It is however remarkable with respect to this controversy that all writers seem to agree in affirming that the competition system has failed. It has not succeeded in providing India with men such as are most wanted by her, and has furnished to India only, what may be called, administrative machines. It is therefore now suggested that some measures should be taken to inspire life into them. It is proposed to frame such a scheme as would give the candidates a certain amount of experience of social life. Mere passing an examination by cramming a certain amount of books is found not to make. good administrators. The establishment of something like

Hadeybury College is therefore thought necessary. The didates who would then pass the final exampations, it is nosed, would be more aseful in the general administration.

Whether this plan can be successful we have already in a previous article expressed our opinion. It might certainly succeed in giving us better men than we get at present. But it is difficult to persuade oneself to believe that foreigners who have studied a few books and known each other's opinions on abstract questions and interchanged each other's thoughts in daily conversation can succeed in administering the affairs of this country. The want of acquaintance and sympathy with the customs and habits of the various peoples that inhabit. this country on the part of the model Civil Servants that are proposed to be manufactured, their usual pride of being the "heaven-born," their hopes of rising in the service by fawning upon the British public opinion, which has as yet no truthful guide, and their natural partiality to British interests, all these circumstances point to one conclusion viz., that these model Civil Servants cannot succeed in governing the country to its contentment and welfare. The men that can do this are those who do take any interest in the progress of the country and are amenable to the opinion of the inhabitants of the country whose servants they are. We have however insisted upon this often and often. We shall see what practical measure the

present controversy ends in. What however more astonishes us is the fate met by the desire which the British Parliament had long ago expressed to the effect that the Natives of this country should be admitted into the Civil Service. It is now about 3 or 4 years since the Government of India was directed to frame rules in view of carrying into effect the desire of P. r. iament. But it is surprising to learn that all that time has not been sufficient for the purpose. The Secretary of State, and the East India Association through him, twice or thrice reminded the Government of the duty they were entrusted with, but with no more effect than drawing an answer that the subject was under its consideration. The famine intervened and disabled the Government from giving much or perhaps any attention to it. Now however that the famine is over we hope the subject will be taken up and soon brought to an end. The controversy which we have spoken of above has however its bearing on the subject which has to be decided by the Government of India. Lord Northbrook when he first landed on these shores was memorialised with respect to this subject and took that occasion to express his opinion to the effect that he would give his serious attention to it, but that he could not make up his mind to introduce the competitive system in India. Whether in the yery beginning of his rule, when he had hardly any intimate knowledge of the Native community, he was justified in affirming that the competition system, of course provided with suitable restrictions, would not succeed in this country, it is indeed questionable. But now that the competitive system, as it existed in England, has failed, there is no hope of its being adopted here. Nor do we mean to say that it is not often attended with consequences by no means agreeable. What we want however is that the best intellect of our country should be given a share in the administration of the country. Or rather now that Parliament has declared that the highly educated Natives should be given a share, it should be without much unnecessary delay considered how best that can be done. There are no doubt many considerations by no means easy of solution. Suppose some such plan as that proposed for manufacturing candidates for the Service by Mr. Goldsmid were adopted here, what would be the result? All those who now attend the Arts or other Colleges and can pay the fees of the new College would prefer the latter to the former and flock to it. And very soon a restriction would have to be placed to check the supply; for already we have seen the opinion expressed that the service is over-stocked. Another consideration is with regard to the competition that would then be carried on between the English and the Native Civil Servants. It would give not a few occasions to create discontent if Government gives any undue preference to any of the two classes. This fact however has, it may be confessed, already pointed out to the Natives that they could not receive fair play in the new rules, and that these will be sufficiently stringent to prevent any but an inconsiderable number from being actually admitted into the the Service. Moreover the difference in the kinds of the treatment received by Babu Surrendronath and by Messrs. Humprey and Levien shews that the number of Native Civil Servants would not be allowed to increase. However the case may be, let us see what the Government of India would do in that direction. There has been more than sufficient delay and but for the neglect with which public opinion is treated here, due care would have been taken to do it long ago.

THE CONDUCT OF OUR RULERS.

(From the Native Public Opinion.)

"THERE are not many young men who doubt of their ability to make a constitution or to govern a kingdom. To know well the local and the natural man; to track the silent march of human affairs; to reconcile principles to circumstances, and be no wiser than the times will permit, is a task in which the great and good have often failed, and which it is not only wise, but pious and just in common men to avoid."-SIDNEY SMITH.

This extract clearly demonstrates, if demonstration were needed, that the science of Government is attainable only by study and by reflection. A mere visionary, who frames his theory of Government, without anticipating the effects of his speculation upon the awkward complexities of real life, proves a failure as a ruler; nay, he proves a mischievous ruler. If in a country, where the Governors and the Governed are spurng from the same stock and are guided by the same traditions, the functions of a Governor are found to be so difficult, those difficulties are still more enhanced, when it so happens that the governors and the governed belong to two differentraces. It behoves then that the governors should take care not to alienate the affections of the people, by trampling in a high-handed manner, upon any of their cherished institutions and they cannot be too careful when the institutions are regarded. by the people as sanctioned by their religion.

The foregoing observations were evoked by the conduct of the Assistant Superintendent of Police, stationed at Palghaut during the recent car festival held in that station. The facts, as we gather them from the Athenœum and Daily News, are these. About the beginning of this month, the car at Palghaut was to be dragged through the streets inhabited by Brahmins. For the sake of preserving peace in those streets, the Superintendent ordered some Thier constables to attend the procession. The Brahmins and the Nairs, as was naturally to be expected, took objection to the Thier constables, and petitioned the Superintendent to substitute constables of other caste. Here was a fair opportunity to the Superinterdent to rectify his mistake. But no. He would uphold the theory, the equality of all persons before the eye of the law. He replied that the roads were public roads, and, as such, open to men of all castes, and that his former order could not be revalled. There was a violent commotion among the high caste men of that locality, and they immediately telegraphed to the Governor, the Collector and the other authorities. The festivities were, of course, interrupted so long as that obnoxious order remained in force.

Now, we would ask why all this unusual stir? It is a welf known fact that the Thiers of the Western Coast are treated with the same contempt there, with which the Pariahs are treated in the Eastern Coast. It is equally well known th. the Brahmins and Nairs there are more obstinately attack to their national customs, and are more conservative than' Brahmins of this coast. The Police Superintendent of his Thier onstates to freely pin le and rub shoulders

and Nairs meet for the celebration of a religious ceremoney viz., the dragging of a car. Such an order then could only have emanated from an officer who was either grossly ignorant of the customs of the place, or who was unsympathetic with the people thus to outrage their feelings. The circumstance that the road is a public one is no defence at all. It is generally considered unfair when parties to ordinary private suits insist upon technical objections. This defence appears to us quite untenable, when the matter is one where the olicer was required to exercise his discretion, when it is a matter which affects the policy of the Government towards its subjects, which ought always to be a policy characterised by sympathy and conciliation. We will conclude our remarks with another extract which forcibly enunciates the duty which a foreign governor owes to the governed. "Nothing can so effectually contribute to the permanency of any foreign dominions as preserving to the governed their ancient established practices, civil and religious, and protecting them in the exercise of their own institutes; for, however defective and absurd these may in many instances appear, they must be infinitely more acceptable than any which their governors could offer; since they are supported by the accumulated prejudice of ages, and in the opinions of their followers derive their origin from the Divinity Himself."-HAMILTON'S DISCOURSE on the HEDAYA.

LAND SETTLEMENT.

(From the Indian Mirror.)

The benefits of the permanent settlement may be clearly realised if we once tunk what Bengal would have been under any other settlement. Suppose that we had no midulemen in the shape of Zemindars and that Government were empowered to settle the land every thirty years; unless we take our Government to be perfect, the chance is that there would be as much discontent and uncertainty as we now see have attended a similar settlement in the other provinces of India. In Bombay where periodical settlement obtains, the ryots are literally ground down by taxation and tyranny. Nowhere perhaps in whole India is so much discontent visible. The exploits of its settlement officers are sung with groans and curses. A comparision of the revenue statements every ten years would show the number of forfeitures and fines owing to default in the payment of the khazana. There are ryots, and they are many, who leave their lands out of sheer disgust and inability to meet the Government demands. The recent orders of the Bombay authorities to revise the settlement may restore confidence to some extent; but as we take it, no concession however ample will increase the popularity of Government. The cause s simple. There the ryots have to deal directly with the State authorities and the latter being ignorant of the habits and teelings of the people will never miss committing blunders. Politically, therefore, Bengal is safe, because here the whole amount of curses falls upon the heads of the Zemindars as responsible for the ofpressions and misdeeds that take place, whereas Government is popular. The ryots look to the paternal Government for every redress of their wrongs. This was manifested in the late Pubna disturbances where we found the refractory ryous praying loudly for the direct government of the Queen. In Bombay on the other hand the political relations between the conquered and the conquerors are not sare, because it is the Gove nment that has to bear the whole share of the unpopularity which here is happily diverted to another channel. It we consider, therfore, the political expediency of the perm n nt settlement, its utility is not only vast but unquestiona le.

WOUR F.NANCIAL DERANGEMENT.

(From the Bengal e)

JOHN Stuart Mill protested strongly against the abolition of the rule of the East India Company. We do not share all his views regarding the administration of the Company; but it is impossible to deny that in one respect his predictions have been verified to the letter. Under the present regime, Native Princes are better treated than they used to be; there are no more territorial annexations under flimsy pretexts; some natives have been elevated to the Bench of the High Court of Lengal and others are assisting in the work of legislation and on the whole the policy of the administration is more liberal than it was during the last days of the Company's rule; but fin ancially we are worse off than even when Lord Wellesley put a severe strain upon the resources of the empire for the destruction of the Mahratta power. Whatever the faults of the Company—and their name was legion during the earlier days of its rule-it understood economy and was always averse to increased taxation. No financial measure has been productive of so much good as the abolition of the transit duties which paralysed the internal tracie of the country, and this was the act of the Company -an act of which the credit must be shared by Lord William Bentinck and Sir Charles Trevelyan.

The Company could always present a bold front to the Government of the United Kingdom, which the Secretary of State for India can never do. The Indian Secretary is a member of the Calinet, and as such he is bound to be at one with his colleagues on points of general policy. It is the duty of his colleagues to relieve the British Exchequer as much as possible, and if they can do so at the expense of the Indian Exchequer on plausible pretexts, they do not scruple to do so, as in the matter of recruiting discussed in our last impression. If a difference of opinion arises between the Se retary of State for India and his colleagues, the former as the weaker party goes to the wall. Hence we see haughty and imperious nobles like the Duke of Argyll and the Marquis of Salisbury protesting feebly against measures calculated to injure the Indiantax-payer, and afterwards acquiescing in them in silence. The East muia Company, on the other hand, had no party or omeial ties to fetter its action and it was a quasi-independent corporation. On one occasion, when the Board of Control sought to compel the Company to pay the King of Ouda's deats to British subjects, the Company fought out the matter in the Court of Queen's Bench.

If the India Office were to fight after this fashion with the War Once in the matter of recruiting, or with the Home Office about postal charges, the spectacle would be too scandalous to be toleraced for a moment, yet without such fighting India would be unable to obtain justice.

As sir Charles Trevelyan sait in Li. evidence before the Indian Finance Committee. "The Home Government, or rather the Home Government backed by the Home public, has a giant's strength which no Indian Government can stand against, and when the Government of India, powerful as it is in India, sees that the people of England are bent on a thing, and have their heads full of it and their imagination excited, and are determined to have it, the Indian Government cannot resist it." Against this giant's strength, the East India Company was a bulwark; mat bulwark is gone, and we are financially helpless.

Much has been said about the elasticity of the Indian Revenue-under the present regime. There can be no doubt that since the aboution of the Company's rule, the revenue has increased; but to what is this incre se due? If it were owing solely or chiefly to the increased material prosperity of the country, the increase would certainly be a matter for congratulation; but the increased material prosperity of the country is extremely problematical. 'Oriss, and Tirnoot tell tales which Mr. Theodors Martin would find it hard to explain away. In a country where thousands of people die shows that to the verge of starvation by a single season's

rainfall, it is absurd to talk of material prosperity, Of course the imports and exports have increased, and the customs' duties yield a larger sum than they used to do; but this after all is a poor index of the condition of the people. The increase of revenue is chiefly due to increased taxation—a matter of grumbling and not one of congratulation.

WKING COTTON AND LORD SALISBURY.

(From the Hindoo Patriot.)

LORB SALISBURY met King Cotton in the face and has fairly vanquished him. In courteous but decisive terms the Marquis answered all the objections urged by the Manchester deputation to the import duties levied by the Indian Government on cotton and cotton goods from England. Mr. Johnson, chairman of the Manchester Chamber of Cemmerce, who introduced the deputation, observed "that the duties were originally levied for revenue purposes alone, but it was found that in their operation they aided protection, that they were injurious to British manufacture by limiting production, and they were injurious to the population of India by artificially raising the price of the commodities they purchased." Mr. Lord, a member of the deputation remarked that "English manufactures were burdened with a tax of from 20 to 30 per cent. as compared with manufactures in India. The tax on the capital employed in the English mills he said amounted to about 13 to 15 per cent. The duty realised amounted to a sum of about £800,000, and he felt that this was a great difficulty." The Marquis of Salisbury took the bull by the horn, and gave an answer, which if Manchester were reasonable

and open to conviction, ought to seal its lips. Nothing could be tairer than the reply of Lord Salisbury. The mills which have sprung up in India have naturally alarmed Manchester, but the cotton lords forget that India having got the raw material has an inherent advantage over England. Even the abolition of the duty would not take away that advantage. Hitherto gross injustice had been done to India by the denial of that protection which it was entitled to from the Government. Even now that protection is not to be given. On the contrary the duty has been lowered from what it was fifteen years ago, and thus whatever protection had been given before has been latterly relaxed. But the people of luma are learning more and more the arts of civilization, which England has been diffusing in the East, and to avail themselves of the resources which bountiful nature has bestowed upon them, but which they were not hitherto in a position to utilize. The seeds of progress have just been sown, and scareely have they germinated when the icy hand of Manchester is stretched fortuto kill them. Could anything be more grossly selfish than this ? India is weak, but Manchester is strong. India has no voice in Parliament, but Manchester has a preponderance in it. India has always been the milch cow of England; its milk is being drained Heaven knows in how many ways, and the dumb millions simply look on and suffer. Now and then some English philanthropists take pity upon them, and lend them a voice. But these are not always heard. It is only when the Government come to their protection, they have a chance of relief. But past experience shews that the Rakhaksh has been the Bhakashk -the protector, the devourer. In the present instance however the protector has fulfilled his sacred trust. Lord Salisbury has resisted the selfish demands of Manchester with a sagacity, force, and conscientious regard for the interests of the millions of the Queen's subjects, which cannot be too highly commended, and for which they cannot be too grateful. We have little to add to what His Lordship said in reply to Manchester. We may however remark that one immediate effect of India's competition with Manchester has been the lowering of the prices of piece-goods, and that means no small saving to the poor Indians, who clothe themselves with the Manchester fatrics. Of course Manchester does not like this loss, but is India to be governed for the

THE UNJUST DEMAND OF MANCHESTER.

benefit of King Cotton alone?

(From the Sahachar.)

We are informed that Lord Salisbury has requested the India Government to aiter and amend the rules relating to the levying of duties upon articles of merchandise. We apprehend that this step taken by our State Secretary is owing to the representation of Manchester merchants for giving a blow to the rising cloth manufactures in India. The Tory ministers do not dare to provoke people like the powerful merchants of Manchester. The great defect of the free constitution of England is that the governing body actuated by party spirit does many times deviate from the path of justice and reason. This is despotism of olden times in another shape. The unlimited power of a single monarch is hundred times more desirable than this seltish arbitrariness of a community.

The Manchester merchants representated to Lord Salisbury that the high rates of duty have checked the trade in piece goods and the duties levied by the India Government show a gradual falling off. But the State Secretary shewed that while the income from that source in 1869 was Rs. 7460000, the income in the last year amounted in round numbers. to Rs. 8160000. Besides, the average import of Manchester piece goods per year in the last ten year? valued at one aundred and sixty millions of rupees, that of 1872-73 valued at Rs. 17,2,3,40,000. The readers will thus percieve how far the selfish merchants of Manchester are accurate intheir statements. The weavers are crying for free trade. In the begining the Government in England adopted the principle of free trade, and Lord Salisbury is also of opinion. that so far as the primiple is regarded the merchants are right. But he orged that India is a poor country, where the Government cannot suddenly give up an annual income of 81 lakhs of rupees. But the Manchester merchants have prevailed upon the members of Parliament, where they have no few friends. Besides, the Ministers are afraid of them. So the Government of India has been asked if it can help the merchants in any way.

But we warn the Government of India. The little manufacturing we had has been destroyed by the Government for the good of the English merchants and manufacturers. We____ will observe that the duty upon the Dacca muslin is levie at a higher rate than that levied upon the Manchester piec goods. Our weavers have been entirely in poverished. But this is not all. The Government in India has come to learn than the whole population cannot live upon land alone and that very few persons take to colonisation. Under these circumstances calamities like the late famine will always befall the land, if endeavours are not made to-improve the manufactures of the country. Was it possible for England, two hursed years previously, to adopt the principle of free trade? This principle ought to be adopted in consideration of time and circumstance. The selfish prayer of Manchester should be rejected, or else immense injuries will be done to India. That cotton being exported from our country should be again imported here in the shape of cloths is quite unnatural Manchester may exert what it may, it is sure to leave Inc. before long.

Printed and published by Chunder Neath Roy No. 2, Ananda Chatterjee's Lane, Eagbazur, Culcutta.

- तिलिक कि मिनित अधाक श्राक श्राक कि कि ति । र्वितिक विक इहेल। जातिक छ वाकि मिश्रिक श्वर्णियक - इहेट जात (कान क्रश माहाया कता याहरव ना। शंख বৎসর হুর্হিকের আশংকায় লোক হততিত্তন্য হয়। ভা-त्र विषय् मा इडेक, वाष्ट्र ना छिल्ल एक कि विष्ट था किएव এরপ আশা আর কাহার ছিল না। কিন্তু ঈশ্বরের প্রসা-मर जन्नां जात वाक्नांत वक खानी अधानां कात নাই। ত্রিহুতের জন সংখ্যা হুর্ভিকের নিমিত রূদ্ধি হ-ইয়াছে কি হু भा হইয়াছে গে বিষয় এখনও ভির করা याश्र मा। शवर्षिणे जस्तु छ ऐप्याश करतम ववर विजय श्री श्री ताजा बिपित विजि य जिये जानिक विविधित छ উদোগগ ना कितिल (प्रत्भंत मर्मनार्भ इंइंड। लिंगिक्त शवर्षित एकि एकि जिल्ल भीमा नाई, जाङ्गिरा झन्द्रात সঙ্গে গবর্ণমেণ্টকে ধন্যবাদ করিতেছে। প্রায় দেশ সমেত কর্ত্ব্যা। গুইকর কিন্তু একটু সাবধানে থাকিবেন। গ্র-লোকের এই রূপ মনের ভাব, কিন্তু ভগাচ অনেকে বিষ্ণু কর্ণেল ফেয়ারকে গুইকরের দরখাস্ত অনুসারে এখন জিজাদা করেন যে প্রকৃত কি ছুর্ভিক্ষ হইরাছিল ? স্থানাগুরিত ক্রিয়া যে রেসিডেণ্ট গণের পদ গৌরব গ্রণ্যেণ্ট নিজ হইতে ও চাদা তুলিয়া প্রায় ছয় কোটি পুর্বাপেকা লাঘ্য করিয়াছেন, বিশেষতঃ গুইকরের টোকা ইহার নিমিত্ত ব্যয় করিয়াছেন। যাহার দশ প্রতিবিষ প্রয়োগ দোষারোপ করার অপাদন পরে টাকার সঙ্গতি আছে তাহারও অতঃ পরতঃ ইহার নি- এই দণ্ড হওয়ায় যে নহারাজাদিগকে কিছু স্পর্দা দেও-মিত্ত অন্ততঃ সুই টাকা ব্যয় করিতে হইয়াছে এবং এই য়া হইয়াছে ও রেসিডেণ্টগণকে কতক রাজাদিগের क्रिश अदमनीय (लगरकत्र) अञ्चान (कगडी छोक। याय করিয়াছেন। এটাকা গুলি হুর্ভিক্ষের নামে ব্যায় হইয়াছে, বুঝিতেছেন। ফল গুইকরের প্রতি এত অনুপ্রাহ কেন? কিন্তু ইহাতে দেশের অল্ল ক্ষ্ট দূর হইয়াছে না অল্ল ক্ষ্ট এ দেশে ইংরাজেরা ষাহার প্রতি প্রথম যত অনুপ্রাহ র্দ্ধি হইয়াছে? দেশের মধ্যে এরূপ লোক নাই যে এই দেখাইয়াছেন ভবিষাতে তাঁহার ভাল কি মন্দ হইয়াছে धाङात्र अनवाष्ट्र मा इहेग्राह्म, वद वह धाकाग्र कड श-রিবার উছিন যাই, বন, কত পরিবার ৫০ বৎসরের মাধাও ज्यथताहरू भारित्यन ना! तोकला निधंन हहेशाएक, नामा ৫। १ वरमदात मस्या इर्डिक इत তবে আবাল तक विन्छ। धनी निधन मकटल तरे जनमंदन थांग जांग कतिएं रहे-त्व। शक्र इंडिक इंग्न कि ना जारा विधाजा जातनन, किछ এই আবুমানিক ছডি: কর পশ্চাৎ দেশের সক্ষান্ত करा इरेशाः इ, लक्ष लक मन ठां छेल अथन अपन शिष्टिं इ, अइ तिश कि तिश्रो अई अक विश्वादित पिन निश्व क अभ, गुना करिया। এখन (मएके ल किमिने थका भ ক্রিতেছেন খে আগর আর কাহাকে রিলিফ দিব না। ञादनिक वदलन (य, द्रिलिक वदन्वत मगश् इश नाई, রিলিফের সময় উপস্থিত इইয়াছে। এক দল হুর্ভিকের मल्लत मण्ड श्वर्णिय वृत्यिया इ इडेक जात ना वृत्यिया है इडेक (मः भंत्र मक्त गांभ क. त्रशां हिन विनशां मांधां तर्गश

—वर्माय जाशक्रा छेशिक्ड इया छेशिक्ड इडेक ना इडेक छ देक दिन श्राम श्राम के कर्णन एक शांत्र न श्वर्णियण्डे धरे तथा तिर्थार्ड करत्रन। श्वर्णियणे रहेर्ड কমিশন নিষুক্ত হয়। তাহারা তদারক করেন যে বরদায় श्रक्त व्यक्ति व इहेल्ल् किन्। इंश्त्रां (अथारन थार्वमं कर्त्रम (महेथारम घर्त्रांग्र) विवाम वाधाहेशा (मेन। नदमांश कर्तन मार्ट्रवर जारू ग्रेट् विलक्ष विनाम উপস্থিত হয়। क शिमाना द्रांग श्वर्ग गरणे जिन পোট करदम (य, अइकর প্রকৃত অত্যাচারী। কর্ণেল তানেক লোকের দারা জোগাড় করিয়া এটা প্রমাণ कर्राहेश (पन। श्वर्शद (जनाद्वल) भगम मग्र मिशा व: नम (य, इंशांत मध्यः यमि अहेकदत्रत व्यवि-চার ও অত্যাচারের ক্ষান্ত না হয় তবে গাৰণ্মেণ্ট তাহার थां ज किन किन जां जा मिटनन। कर्नन कियां जाना क्रिशिছिलन (य क्रिन्नार्गत्रेत्र दिश्रार्हे - তक्काश विभिद्यनः भविषेत्र (अन्धितः विष्ठादित अड-बार जिन किছ जमछक्छे इहेटलगा अहेक्द्र मामा छाहे न्त्रिक एन अश्रामि शर्म नियुक्त क्रियान । क्रिन — जा बलन य ज जाति विश्वना मामा जो रे नति जि চতুর, বিদ্বান ও বুদ্দিমান ব্যক্তি। ইংলভেও তাহার অনেকের সঙ্গে আত্মীয়ত। আলোপ পরিচয় আছে। 'क (र्नन श्राथा (प्रसी शाहित्सन स्वाहा ज नर्जा ज जिल्हान ना इहेट शाद्रन। जाशां क्र क्र कार्या इहेट न न।। তাহার পর যাহাতে-শোকে নরজির প্রতি অসন্তটে হয় এই রূপ যত্ন করিতে লাগিলেন। তাহার পর ওইকরের

जिङ्गकाद्य (योगा।

उभाव विष धः ग्रांद्रश्वे दिनाचाद्वां क्रावन । नविज ध ममूमश दिषश लिখिश। शवत्रवंत (जनादत नदक जानान। গাবর্ণর জেনারেল এই নিমত্ত কর্ণেল ফেয়ারকে ञ्चानाञ्चित् कित्राह्न। यथन धरे छङ मश्याम वत-माग्र প্রকাশ হইল তখন গুইকরের আনন্দের আর সীমা রহিল না। তিনি তিন হাজার বাকাণ ভোজন कर्तान। এই সুবিচারে छहेका ত আননিদত হইবেনই, विश्व इश मकल स्विशिन ७ कदम द्रांजादा जानिन इहे-श्राष्ट्रन। जामता श्रानु जाननिष्ठ इहेशाहि। (त्रिमिएफ्टे-অত্যাচার করেন, তাহারা যে রূপ বেয়াদ্ব, তাহাতে তাহাদের কাহার শান্তিও অপদস্থ হওয়া নিতাত্ত भागनाधीन दाथा इहेग्राइ जोहा जाहादी विलक्षन श्राः ठ जान , श्राटम जागत्रा অবগত তাখা ইতিহাস

शब (श्रांकत श्रां

জীরাম তারণ রায় রাণীগঞ্জ —"জ্ঞানামুর" হইতে ' जम्मे वाम' नामक या প্রস্থাবটির কিয়দংশ তাতিরিক্ত অমৃত বাজার পাতিকায় উদ্ধৃত করা হয় তাহার প্রতিবাদ করিয়া লিখিয়াছেন। পতা প্রেরক সমুদায় প্রস্থাবটি জ্ঞানাঙ্কুরে পাঠ করিয়া তাহার প্রতিবাদ क ब्रिवन।

बोइन्मदर्शाना वर्षाभाषायः, दवनावम—कानीब महावाषात अकि लिखि इहेशाएए। अहे छेलल कि जिन विख्र मान करिया एक । किन्तू छानी ताई अहे मारन व कल (बनी প্রাপ্ত इरेश्नार्छ। याञ्चाली ভিক্সুকেরা তত লাভ कितिएं शिद्र नाहे।

कमाहिए मर्भकमा— (य घडेनां हि निथिशाहिन जार) मश्बाम शद्ब डेरिवात याशा नद्द। याश्राद्ध माधा-त्रांत्र खीं जिला श काश मश्याम श्रांतिन।

ত্রীপ, ভ - যে পত্রিকার বিক্সে লিখিয়াছেন তাহা-তেই আপনার প্রস্তাংটি প্রকাশ করিবার নিমিত পা-कि इटिवन ।

बिहाम मिका প্রভৃতি প্রজাগণ, ডাবুক, বীরভূম— इश्राप्त ज्याधिकार्तिनी जीयजी जिन्न नात मीनजात जूशमंजि क्रिशं विलिशं (ज्न (य, अहे जारमत जां मा-इत्लित मरधा जकि लार्रिकाला नाई। अग्र जारुषा यिन जागता मरधा २ वांनी याहर लाई जिर कार्य ভাহার দ্বারা একটি সুল স্থাপিত হয় ইছা প্রার্থনীয়। পিতা মাত স্ত্রী পুত্রের কটে দেখিয়া তাহাদের ত্ঃখনিশ্বা-গত বংসর ইহার পুত্র প্রীযুক্ত বাবু লাশুতোষ সিংহ সের সহিত আমাদের ছঃখ নিশাস ফেলিতে পারি তাহা একটি স্কুলের উদ্যোগী ছিলেন, কোন কারণ বশতঃ ছইলে কি আর আমাদের বারুয়ানা থাকে, না আর আন-इंश इंश्ड जिनि क्वां थार्कन। এक्वन मिकां विश्व मा मा मित्र वमपारित्र ने कि विष्ठ मन यात्र ? जोमती को लि छ त्या য়াছে, অত এব পত্র প্রের কোনা করেন যে, তিনি ষদি কখন ছুটি পাই, বড় জোর তাটাক। সজে করিয়া श्रेनदां अ मह ९ (ठ छो । इता श्री इन।

वीविध माम गूर्थाशाशाश, म.इणश्त-इंश्त धक জন আত্মীয় পীড়িত হওয়ায় কৌন হাত্ডিয়া বৈতা কৰ্ত্ক চিকিৎসিত হয়েন এवং জ্মে তাহার পীড়া এরপ রিনি इहेश शर्फ (व जावर्गात्व जाहारक कलिकाजाश वानिशा वह वार्श চিकिৎमा क्रिटिं इश। প্র श्रीत्क म्हजावज्ञ अहे जित्ना का कृष्णि देवत्नात छे भत **छित्रा शिराराट्ड्स ७वर जारा नाट्स नाट्स ना** किंद्र ज शर्या अश्व । शव (अतक अ अ व क तिन य भवर्ष मर्पेत এমন কোন আইন করা কর্ত্রা যাহাতে হাতুড়িয়া विमात्रा काशादक हिकिৎमा ना कतिए शाद्र। (थ्रब्र्यः वर्षे अरे स्था थ्राच करात शृत्क विद्यन्त्र) कर्खवा ছिल य्य, जारमक न्यिनिक्छ छ। जांबर

महज (दाशी काल जातम शांड इहेशाइ। जगड অবস্থায় হাতৃড়িয়ারা বলিতে পারে যে, যখন সুশিক্তি ডोक्कोत्रिकि कथन २ यद्यत महपद नाम वावश्त क्तिएक (मिथा यांग जथन (कन छन्न जो हो: मन जानाहे এরপ আইন প্রচলিত হইবে?

প্রেরিড।

(तल उत्य कर्या ठाती एम त पूर्णणा।

व्याभवा व्यक्तिश शविव शवर भूकिवि होन। शिवा, यांडा, जी, श्रु जित श्राजिश लिन कर्तित विन्या (तल अर रिकेमत्मत कर्म कतिएक दश्च इहेशि । आभामित्रात ছুটी অতি বিরল। এমন কি, পিতা মাতা মরিলেও ছুটी পাওয়া যায় না। এজনা অনেকে পিতা মাতার मृजा সংবাদ পাইয়াও পত্ত গোপন করিয়া রাখেন। ছু होत छना (वभी दित्रक क्रिल मूनिव गर्भाश्वा धक वादि इति लक्टि वल्लन। श्वादे वलिशा इ जामनी ञां शिद्धित, कर्म ना कि ब्रिट्स कि क्रिश् विलिए , ध जना মুনিব মহাশয়ের। যে রূপ ত্রুম দেন অগতা আমা-मिशिएक जोशाएड मगाउ इहेए इया यमि किर अहे श्रीत्वस्मत रक्तू थार्कन, जाहा इहेल जामािमशरक श्वा ना क्रिया आयामिताड विषय किञ्चि आर्ज-लन ककन। आभारमत कठक छोल वम्नाम आर्ड्! আখ্যরা ইহার উত্তর দেই যে, আ্যরা প্রম হংস বা बका धार्मिक निर्श (वाध इय जकत्ल रे एक्थियाएइन (य (त्रल ७ (त्र रिकेम त्मत्र कर्म का की प्रमान विश्वमा ५० इहे एक ०० শের উর্ন প্রায় নাই, এরপ বয়সে মনুষা স্বভাবতঃ কুকর্মে রত হয়। সঙ্গে পরিবার রাখিতে পারিলে অনেকের চরিত্র সংশোধন হইতে পারে, কিন্তু রাখি কি রূপে? আমাদের বেতন ১৫।২০,বড় জোর ৪০ টাকা। যাহা-দের বেতন ৩০ কি ৪০ তাঁহারা প্রায় জ্রী সজে রাখিয়া. भाख मृद्धि धात्रन कतिशा थारकन, ध्वर छाश्राशे धकारन जि विनिया পरिविष्ठि ॥ जित्व अहे ३७ । २० छोकांत जिल लाकि मिर्गत डेशांत? जागता कि कि कि कि कि कि विन रे वन् गा-(यमी कित्रम (त्रन अद्भव कमक ताथित? ध क्षे मयोनू महाजा (ए इइ नाई एय धई ज्यमान अ शिक नृष्ठि करतन, ইহাদের চরিত্র শোধনের উপায় করিয়া দেন? আমা-मित कुछ वृद्धि धकती छेथां य जार्ष विलया (वाध হয়। তাহা এই—

वदम त छूरे वात कतिया जागामित छूछी मिछ्य। इ-डेक। তार्। रहेटल वागता गाया २ शतिवार्गित करें अठ (क (मिथिया। वा नक छ। मा उपूर्डि धा तर्ग क ति उ जागता এত वातू किएम? हूजी नाई, वाजीत ठाल थड़ আছে কি না, চোরে বাহির দরজায় আগড় খানি চরি कर्त्र निर्म शाहिक कि ना, शिला, माला, खी श्रे व इरवला পেট ভরে ভাত খেতে পাছেল কি না তাহা স্বচ্ছে (मिशिट भारे गा। (तल धरत काम्मीनित वालायाना वाम कार्ति, कार्ड कार्डिश मनिष्ठि वालाथांना इर्ग डेरिछ। वाहि। शानाम। अमिटक वाजी त ल्यां कि ४० छोका (मन) कर्त्र वटम जार्डन। काशांश कड फिर्न्त श्र वाही शिया जा-মোদ প্রমোদ করিব না আমি এত পাব, উনি ত পাবেন, ভাগাড়ে যেন গাৰু পড়েছে শকুনির ম क्तिक भरत छेश्ना छ। नि । नि इहेट उट्ड उ कि कुकर्माई कित्रलाम। किছू नित्नत्र खोत गत्न कड आंख्नान इहेर्न, न খিয়াই তাহার প্রাণ উ ডয়া यरिष्ठ। कि

यार्यम (मई वन यार्यम इहेश माँ छाहेला। (मई छाना व्यक्ति एक इंग्लिस विश्व विष्य विश्व इहेटल जात आ (माय थाएक ना। जाज अत जामाएन त कुछ वृिकाः ७ এই বোধ হয় যে আমাদের সচচরিত্র করিতে इहेल इंडि डेशांश, इश हूडी, नश (वडन हिन।

बो—(तल अट्यं कर्म ठां दी।

पत्र जोकोश लर्फ - र्थकिक मर्शित छ जोगगा।

মহোদয়ের শুভাগ্যন হইয়াছিল। দরভাঙ্গার রাজভ- ল স্ব আত্স বাজি আরম্ভ হয় এবং এক ঘণ্টা কাল रत्मत मिक्नि थात्र ७। ४ माईल मृत्त नशतीत थक थाएउ ल इतिया महिं कानाइया मिम देवत श्रुक्त शीत निकटि भूगिश यावमीश ভक्र मलान अ जनगाना वल्जत जनशन ७ अमत इस्या जाङार्थना जना छे गश्चि इह सहया हि लन। ले स्वानित मः नास्त (मांडा स्रेशिह्ल। तांडात श्व-मित्क स्माज्ज जलक ज जर विविधिक क्षि जोक़ জियनात यहाजन धार कंग्निशी उप मन्त्रात्यता (अनी वक्त इइया मञ्च नयान जाहात जाहात जाहामन প্रजीका क-ति उिछि लिन। ध श्रकात इछित मश्था। अञ्चन इहे लेख वाध रहेशाहिल। प्राखांत जाश्र थाएउ जन्ति विखीर्ग हला लिला बाम बाम काम काम कर मानि हो कि उक्ति इरेश हिल, ऐशी लाखें ध्वर वर्ष वाष्ट्रा मिल धकि " छ। इरामा कि वाक " इरेरा। किन। धरे श्रीनिति धक शार्य धक मन देश्त्रां का वाका वा मण्यायान, जाश्र शार्म स्वीय जनम हीयां द काद्र त প্রধান সেনাপতি নিজ সৈন্যাণ সহিত নিক্ষ্যিত তর-বারি হত্তে এবং অশ্বারোহণে জাক জমকের সহিত छिशश्चि हिल्लम। श्रीलम स्रशांत्रमः छेट मार्ट्य ভাষার ইনেশাক্টর কন্টবলের দলবলের সহিত চতু-मिक जमन करा शारारा मिए कि किल्ना जनाना यान-मीय लाक किञ्चि मृद्र श्रुक्ष त्रिगीत भाष्ड्र डेश्र उ म तिञ्ज क्विनिएज, प्रश् तो छात शास्त्र, क्विन मणा-मान थ कि शा (क इ व। विभिन्न। ध इ माना इत मुना अवटल कन • করিতে ছিল। ভাইসরয় মহেশদ্য প্রাতে মোজফাপুর इहेट इ इ उना इहेशा श्रा नामक शादन शवर्षिण श्रा-लिंड वाशालश भारामण न शूर्यक ध छोटन जाशराहरू (वल्गे 8 है। इ मगश ए जा गमन कर्त्य। जिनि छोनी स मरा রাজার ঘোড়ার মাড়িতে আদিয়াছিলেন। ভাহার গাড়িতে উাহার পুত্রিয়িনি এডিকং এবং ক্ষিসন্ত্র बियु ज (बली मार्व निक्ठ इहेश हिल्लन। स्नेश किंग-मनत (माजदरें अवश फिल्के कहे जुशांतिन दिए उने मा-(इव जाशमत जाशादाश्राहा श्रमा इहेट डाइर्ब मग-ভিব্যাহারে আনিয়া ছিলেন। পৌছিবা মতা বাতা বাজিতে लाशिल, তোপ धुनी इहेल, टिमना मिट्रांत जा अ मक्षांलम षांता मन्नाम श्रीम छ इहेल धवर मक्ब मिक इहेटज স্ক্ লোক ছারা ন্তশির ও দেলাম অপিত হইল। ভাইসরয় মহোদয়ও এক হস্ত প্রত্যুত্র প্রদানে অশক (वार्थ डेड्य इंड वार्श्य देखानन शूक्त क यावनीय लांकित माखाय शतिवन्नं न कतिल्ला । मत्र जाना मर्ग बाजात शुझ जां ज इहे जन, जांश जिना व वाहाइत जां लि था माद्य, अत्मद्यत तांक शूब वार जांत पृरे वक जन मस्यां उत्ताक अकि जाशव हिलाक श्वा इरेट তাতাসর ইওয়াতে সম্বাধিত হইলেন, তদপরেই গাবণর टिनाट्डल वाहाइट्डव शांडि प्रचाना जिसूर्थ अ, जावदश विङ इहेटलन। डाङाज शम्हाद २ वडीशार्ड, डलनिष्ठिशाज, क्रि, जकल लोक, जकल क्रीर्डांब, शंगन শ্রন। মহারাজার নরগণনাছিত দিতল अज्ञ माट्ड्र थाटकन ज्थां स जारे-

न्पिड इड्राइिएलन। প্रथम शावेत ऐशत God Save कार निश्व। the Queen এবং সিংদরজার উপরে Welcome to Dhurbhangah. वाका जकल वड़ जकरत कांजुलामान ১লা ডিসেম্বর মঙ্গলবার অপরাহে মহামান্য ভাইদরয় র পে প্রকাশ পাইতে ছিল। শুভাগমনের কিঞ্ছি বি-পर्याख দশ क तुन्म भाषिত इहेशा जान्कर्यार जिथा मकल দশ न करित्र छि हिलन।

রাজ বাটি:ত যে লিভি হয়, তাহাত কএকজন চিহ্নিত জমিদার রাজা এবং রায় বাহাদূর এবং সমস্ত इश्राद्ध जिन्न जार्थन जाना को शादिक याहर ज (मध्या इय नाई। धमन कि ब्रांक ज्यत्नव ठज्ञार्थ (व विखीर्ग क्मभाष्टि वाशीना जाट्ड, उथायु जना काश्राटक याइएड (मध्या इय नाई। याई। इडेक डाईम य मर्श-দয় এই প্রকারে রাজ ভবন হইতে নির্গত হইয়া পুন-রায় নরগণনায় আদিয়া রাত্তি তথায় অতিবাহিত कर्त्व। शर्मिन थाएं जिनि किमिनभारतत मिश् রাজার গাড়ি ঘোড়া আরোহণ পুর্মক, রহিকা, মধু (रजी, तरइए। श्रज्ञ इः र्जिंक शींएक श्रम भक्न পরিদশ্ন করত সন্ধার সময় আবার দরভালায় প্রভ্যাগত হন। এবং ওরা তারিখে বেলা ১০ টার সময় যাত্রা করিয়া স্থানীয় মহারাজার অশালয় বগী-थाना माज्याना इंग्न शालान इंकूल ७ वागाना ताज ভবন পরিদশ্ন করত ভিত্ত রেলওয়ে ফেশনে গমন करत्रन। उथांत रेश्ट्रांखि वांखना (१३१ मिशांहि नांखित পাহারা জাক জমকের সহিত তাহাকে রেল্গাড়িতে जार्बाह्न कवारेश, मकल रेश्त्रज ७ जमं मर्खान मङ्का यतः चिक्र वावारम প्रजाभिक इद्दलन। प्रभिष्-भारतत दिखानंत मिन वज्ञामनं रामेशायत मन य প্রকার অন্যক্ত না হ্য না ছঃখ ভাবে অবিভূত হইতে। दमशा यांश, नर्ड माद्रित वाश प्रतित वाश्यम छ প্রত্যাগাংকে কণকাল জন্য ত দুপ ভাবোদয় লক্ষিত इरेश्रा इल। वर्षा काल रहे एउ व. श्राष्ठ विछ्छ दिल वस किल। इंशा शिद्धिणाक इंहरिय अवश कि काल छाना रामा রহিল এই প্রকার দেখিয়া শুনিয়া তদ্বির সকলেই इजान रहेशा हित्नन। जाशांउडः खना साहेरङ ए वाशाभी अला जानूशांति इदे एक क तिल वाशांत हिल दिकः এবং ভাড়া লইয়া সকা সাধারণকে যাতায়াত করিতে मित्र। महजांका जाजि श्रीमिक स्वाम वित्नियं हो लो वाव्यान जिमात पर महाजन पश्रात थाकिया विख ७ कर्म कार्या ७ कावमाय दर्श जा करित ए इन। न र ज न भी घ अक जी खा खा इ दे दिक खना याई (ए ज्याहार ज ज जिल्ली थाका (य ज जेव वावणाक जाहा जात वला वाल्लाः धवर डेहाशाकि-(ल (इल ७ एए कि क्यों नि जार नक डे भाड के कि तिर्यम खाइ। अट्लाइ नाई।

मत्र जामा। करेनक वर्षे जिएमञ्ज ३५१४। । शिर्मिका

ीशांगनांश कृति छोकांहेए उत शांक् छांच ।

তাত্ত্য পা না জিলায় ভয়ানক প্রজা বিজোহের घढेना ट्राथ इय जाशनाय शाठक वर्णय कारादा इश् नाई। जाना पुरे दरमत यादर ध श्वात्नत उप लादिनत नियाशिन इइट्यक ना। अश्वादन कृति छाकाई छ। अ न्यांना तुर्मिर् घ्णांकत कार्यात এত দূর প্রাত্তাব যে তাহা বলিয়া শেষ করা যায় না। গ্রায় প্রতাহ ৭।৮ ভী চুরি হইরা খাকে। গতকলা রজনীতে বেড়ার । তে এই পতিকা কলিকাতা বাগবাজার আনন্দ চা

টার সময় রাজবাটীতে শুভাগমন করেন। একে রাজ- হত হইয়াছে ও অপর ২ জন সাতারিয়া নদী পার বাটি তাহাতে তাদৃশ মহলোকের শুভাগমন জন্য গৃহ ইয়া সাহাজাদপুরের থানায় এজাহার দিয়াছে সকল সুশোভিত সুসজ্জিত করিয়া এক অপ্র শোভা পুলিশ কাহাকেও প্রত করিতে পারেন নাই। নোলেন ধারণ করিয়াছিল। প্রজ্ঞালিত দীপ্যালা বহির্ভাগে সাহেব স্বয়ং তদারক করিতেছেন কি হয় বলিতে পারি প্রকোষ্টেই এ প্রকার মনোছর আকারে স্থাপিত হই- না। এত অত্যাচার করিয়াও বিদ্রোহীগণ উৎসাহ য়াছিল যে তাহাদর্শন করিয়া সর্বে সাধারণে আন- পাইতেছে ইহাই আশ্চর্যা। তদ:ত্ত যাহাজানা যায় প-

वाशनात जदेनक शाहिक

यकः त्लत मूला श्रांशि !

बीयुक्त गांतू जागळना घठेक जलभारेखिं	6
" " পার্বি মোহন চট্টোপাধ্যায় তুর্গপুর রাজসাহী	50 .
" " গুরুদাস সেন, বেশ্যালিয়া	
" "রাজ কুমার রায় চৌধুরি, বারাইপুর	30
" " इमिक ल ल वसू, भारश्म बीदामशूद	Œ
" " হরিনাথ চক্রবর্তী, মাহিগঞ্জ রংপুর	50
" " शितिन ठव्म (ठोधुति, मिनाजश्र	a >
'' '' রাম কালী চেপিরুরি কানপুর	3.
" " धन क्ष रत्ना भाषाश वा ज	5.
" " लल्ड (माइन हर्षेशभाषा यरनाइत	3 .
" " भाटलाक छन्प बाग्न छिधु वि छ छो। यो भ	8
" " यञ् नाथ চটোপাধ্যায় দিনাজপুর •	30
" " भनी ভূষণ মৈত বাকিপুর	8
" " खज भाइन मज वाहो जाए मान्मविश्व	b]
" " ঈশর চত্র চক্র বর্তী মানভূগ	240
" "সরপ চন্দ্র দাস রংপুর	50
" " काली क्यां व त्यांशाशाशाश वाकिश्र	P
" " लिव ठन्ज अधिकां रि ठाना, मित्रां जगञ्ज	210
" अनान हला वक्षि धूतूषि	340
	30
'' रिमय़ म जो उछ्न तकि म शोभी नभूत मो मी तिथू	র ৬
শ্রীযুক্ত বাবু গোর মোহন বন্দ্যোপাধ্যায় সিন্থিয়া	4
" " भागमा श्रमान तांश किश्री का मिश्र का	কা৮
" " (मान शांविन नार्यक वानिशंक	30
" " अश्रत চन्म नाथ मालाल हि॰ ए। ए मतिश्र	
" " लान शांशांल विश्वाम রाণাঘাট	3.2
" '' रिकलाम छन्त छक्तवर्डी जिश्रा	3
" " जन्म नाथ वागि जामघत जागनशूत	2
" "काली नाथ विद्याम मधुशू इ	25
" " त्राविक वाम दिश्वी त्रावा	3.
" " शमाधत था तश्त्र ।	>0
" ग्राइन्स नाश পणिक विद्यान	30
" " भागी ज्यन जिल्ला काली श्र	9
" " भागी ज्वन ख्व धन्निन । " " जारन्त्र हल्य अन वहिलाल	30
	THE RESIDENCE OF THE PARTY OF T

रिख्वाशनन कर्भशी।

(जाला (य. मनी शुर्वत जाखः शं ज - धरिन यह्नमश्रुद्वत यद्या य इयामल ताज वाणि जा-জার কুমারদিগ ক ই রাজী পড়াইবার ও রী তি नीं जिका कराइवार जना धक्जन छेथायुक निक्तित १८ दिशेषाम । याणिक (वजन ३०० धक नाज छोका। विनि माद्यक मिनियांत धमकलांतिम् श्ल ए त जाया। ध्य, ध, शतीकां स देखीर्न वाशक लिक्किका कार्या क त्रा डारात शीं की विष्ठ विश्विष शांतर्श इहेशां छिन अन्छ मु खुडाव विश्वित व्यक्तिक भारे। जनम धक्कन भराष्ठ म्मान कियान कर्मा शारिशाला व्यादिकन ममाधक वाक्रिशीयन इहेरव। कर्मार्थिशा ख ख श्राभंशा शेखित जानू-धन मान जीरन तका शाख्या इकत इरेशाएए। यङ मिन लिशि उह ए महत्र मात्मतः २० मित्नत मह्या निम याकःकातीत निकंछ आदिमन कतिद्वन।

> छिकां खि छ छ नाम দেওয়ান মহিয়াদল রাজ বাটি।

श्ची निर्नी एक तिनिष्य शिकाश एकि इन्हें इन्या (यात शिन २ न वारि इन्हें शिक तुन्त्र एजन (लाक खेशाहिल, जगाया ० जन बिह्म नाथ ताम दाता थकालिङ इस।